



भारत का राजपत्र The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-16092021-229667
CG-DL-E-16092021-229667

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 3409]

नई दिल्ली, मंगलवार, सितम्बर 14, 2021/भाद्र 23, 1943

No. 3409]

NEW DELHI, TUESDAY, SEPTEMBER 14, 2021/BHADRA 23, 1943

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 14 सितम्बर, 2021

का.आ. 3721(अ).—अधिसूचना का निम्नलिखित प्रारूप, जिसे केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की धारा 3 की उप-धारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) तथा उप-धारा (3) के साथ पठित उप-धारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जारी करने का प्रस्ताव करती है, को पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली, 1986 के नियम 5 के उप-नियम (3) की अपेक्षानुसार, जनसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है, और यह सूचित किया जाता है कि उक्त प्रारूप अधिसूचना पर, उस तारीख से, जिसको इस अधिसूचना को अंतर्विष्ट करने वाले भारत के राजपत्र की प्रतियां जनसाधारण को उपलब्ध करा दी जाती हैं, साठ दिन की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् विचार किया जाएगा;

ऐसा कोई व्यक्ति, जो प्रारूप अधिसूचना में अंतर्विष्ट प्रस्तावों के संबंध में कोई आपत्ति या सुझाव देने का इच्छुक है, वह विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर, केन्द्रीय सरकार द्वारा विचार किए जाने के लिए अपनी आपत्ति या सुझाव सचिव, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, अलीगंज, नई दिल्ली-110003 को लिखित रूप में या ई-मेल esz-mef@nic.in पर भेज सकता है।

प्रारूप अधिसूचना

ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य उत्तरी राजस्थान में गोपालपुर पहाड़ियों के निचले समतल भाग में स्थित है और राजस्थान राज्य में चुरू जिले के सुजानगढ़ तहसील में 7.1977 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्रफल में फैला हुआ है;

और, ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य अधिसूचना संख्या एफ.7 (379) राजस्व ए/59 तारीख 19.09.62 द्वारा 1962 में जंगली पशुओं और पक्षियों के संरक्षण के लिए 'रिजर्व क्षेत्र' घोषित किया गया था। क्षेत्र अंततः राजस्थान वन अधिनियम, 1953 की धारा 20 के अधीन आदेश एफ 7 (118) राजस्व /66 तारीख 11.05.1966 द्वारा 'रिजर्व वन' अधिसूचित किया गया था और 08.09.1966 को राजस्थान राजपत्र में प्रकाशित किया गया। अंतिम अधिसूचना की अवधि के दौरान खंड का कुल क्षेत्रफल 2014.25

एकड़ (815 हेक्टेयर) था और राजपत्र अधिसूचना संख्या एफ (379) राजस्व/ए/71 तारीख 13.07.1971 द्वारा संशोधित किया गया था। 1983 में कलेक्टर चुरू के द्वारा, कुल क्षेत्रफल में से 96 हेक्टेयर भूमि निकटतम ग्राम के नमक खनिकों और किसानों को आवंटित की गई थी। वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के अधीन चुरू के जिला कलेक्टर ने लोगों के अधिकारों का फैसला किया और अंततः आदेश एफ 12 (2) (304) राजस्व/97/13/98 तारीख 23.08.1998 द्वारा इसे अभयारण्य घोषित किया गया;

और, ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य में वनस्पति और जीवजंतु की दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटापन्न प्रजातियों जैसे मोथा ग्रास (साइपेरस रोटंडुस), रेड फलारोपे (फलारोपुस फुलिकरिउस), चीनी पोंड बगुला (अरदेओला बच्चुस), रेगिस्तानी मॉनिटर लिजार्ड (वारानुस ग्रिसेउस), स्पाइनी टेल्ड लिजार्ड (यूरोमैस्टिक्स हार्डविकी), एडोसा (एध्राटोडा वासिका), लाल सट्टा (बोइरहानिया डिफ्फुसा), फोग (कल्लिगोनम पोलीगोनोइड्स), वान तुलसी (ओकिमुम संक्लुम), लाल-नेक्कड फलकोन (फलको चिक्कूइरा), लॉंगेर फलकोन (फलको जुग्गेर), स्टोलिज्का बुशचैट (सैक्सिकोला मैक्रोरिन्चुस) को वास प्रदान करता है और क्षेत्र में स्थानिक प्रजाति स्पांटेड क्रीपर (सालपोर्निस स्पिलोनोटस) भी विद्यमान है;

और, अभयारण्य में अनुकूल मोथाई घास की भूमि है जिसमें कंटीले मरूस्थल वनस्पतियों की बिखरी झाड़ियों के साथ-साथ उत्कृष्ट खाद्य मूल्य की विविध बारहमासी प्रजातियां शामिल हैं;

और, क्षेत्र में मुख्य वनस्पति विद्यमान है जिसमें घासों जैसे साइप्रस रोटांडु, साइप्रस बुलबोसिस, केंचरुस कल्लाटिकस, सेंचरुस विफ्लोरुस, केंचरुस किलिअरुस, डाइकैथियम प्रजाति, साइबोपोगोन, जवारिकोसा अरीस्टिडा, हेलाक्सलॉन सेलिकोनियम, सालहोरा इंडिका आदि शामिल हैं। वृक्षों, झाड़ियों और जड़ी बूटियों की अन्य प्रमुख प्रजातियों में बौनली (अकेशिया इक्वइनोन्टी), चोनलाइ (एमारांथुस विरिडिस), बुई (ऐरवा टोमेंटोसा, बुर्मी), बुई (ऐरवा जवानिका, संतयानाशी (एरक्यूनोने मेक्सिका), पलक (बीटा बुलगारिया, लिन्न), लाल सट्टा (बोइरहानिया डिफ्फुसा), बोगावेल (बोउगाइविल्लेया स्पेक्टाविलिस), बोगावेल (बोउगाइविल्लेया ग्रेवरा), काराउंडा (क्रिस्सा स्पिनारुम), आक (कलोटरोपिस प्रोकेरा, ऐट), अकरा (कलोटरोपिस गिगाटेया, लिन्न), बगरू (कलेओमे ब्राच्यकारपा), बाथुआ (चेनोपोडियम अल्बुम, लिन्न), खार्शना, सिनिअन (करोटोलारिया बुरहिया, बुच), फोग (कल्लिगोनम पांलीगोनोइड्स), बोकाना (कोम्मेलिना बेंगालेंसिस), धतुरा (धतुरा मेटेल), भांगरा (इक्लिप्टा प्रोस्टराटा, लिन्न), थोर (इयफोरबिया नेरीफोलिया, लिन्न), थोर (इयफोरबिया निवुलिया, "हैम), गैंगेरान (ग्रेविया टेनाक्स), लाना (हेलोक्सलॉन सल्लिकोर्नलकम), खेंप (लेप्ताडेनिया पयरोटेचनिका, रॉक्सव), मोराली (लयकियम बारबरुम), नाग-फनी (ओपुंटिया इलाटिओर, मिल्ल), वान तुलसी (ओकिमुम संक्लुम), अरांड (रिकिनस कोम्सुनिस, लिन्न), दसरन (रहस मायसुरेंसिस), सर्पगंधा (रउवोलफिया सेपेंटिने, लिन्न), सजी (सल्लाला ग्रिफ्थी), कटेली (सोलेनम सुराट्टेंसे), गोखरू (ट्रिबु सुराट्टेंसे), दुध्री (वाल्लाटिस सोलानाके, रोथ), हिरन खुरी (वट्टाकाका वुलुविलिस), अश्वगंधा (विथानिड सोरमिफेरा), झार बेर (जिजिफस नुमुलारिया), कैर (कप्पारिस डेसीडुअस) आदि हैं;

और, ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य जीवजंतु प्रजातियों जैसे ब्लू बुल और नीलगाय (बोसेलाफुस ट्रागोकामेलुस), कैप्पेड लंगूर (प्रेस्विटिस पाइलेटस), सामान्य लोमड़ी (वुलपेस बेंगालेंसिस), सामान्य लंगूर (प्रेस्विटिस इंटेल्लुस), डेजर्ट बिल्ली (फेलिस लिबयका), पांच धारीदार गिलहरी (फुनाम्बुलेसे पेन्नांटी), गोल्डन बिल्ली (फेलिस टेम्मिनोपि), हेइना (हाइना हाइना (लिन्न)), हेइगे हाँग (हेमिडचिनस ऑरिटस (गेमेलिन), भारतीय खरगोश (लेपुस निगरीकोल्लिस रूफिकौडटस), डेजर्ट खरगोश (लेपुस निगरीकोल्लिस डायानुस), भारतीय साही (हिस्ट्रिस इंडिका (केरी), सियार (कैनिस ऑरियस (लिन्न)), भारतीय ग्रेविल्ले (तातेरा इंडिका), जंगली बिल्ली (फेलिस चाउस (गिलडेपेटेट)), नेवला (हार्पेस्टेस एडवार्डसी), ओट्टेर (लुतरा पेर्स्पिसीयता (गेओफफोरोय), रतेल या हनी बैज (मेल्लिवोरा कैपेंसिस (सक्रेवर), लाल लोमड़ी (वुलपेस वुलपेस (लिन्न), भारतीय गजेल्ल (गजेल्ला गजेलिया), काला हिरन (एंटीलोपे सर्विकाप्रा) आदि के लिए वास प्रदान करता है;

और, वन्यजीव अभयारण्य में मुख्य पक्षी प्रजातियों में डेमोइसेले क्रेन (गरुस विरगो), सामान्य क्रेन (गरुस गरुस), वार-हेडेड गूज (एंसर इंडिकस), रूडी शेल्डक (टैडोर्न फेरूगिनिया), सामान्य टैल (अनस क्रेका), ब्लैक-शोल्ड्ड काइट (इलानस कैरुलेस), शिकारा (एक्सिपिटर वैडियस), टैनी ईगल (एक्लिता रैपैक्स), लैंग्वैर फाल्कन (फाल्को जुग्गेर), रेड-हेडेड फाल्कन (फाल्को चिक्केरा), मर्लिन (फाल्को कोलम्बेरियस), सामान्य केस्ट्रेल (फाल्को टिन्कुलुस), लेस्सेर केस्ट्रेल (फाल्को नौमानी), स्टेप्पे ईगल (एक्लिता निपलेंसेस) ग्रेटर स्पांटेड ईगल (क्लैंगा क्लैंगा), ईस्टर्न इंपीरियल ईगल (एक्लिता हेलियाकल), स्पांटेड ओवलेट (एथेना ब्रह्मा), यूरोशिन ईगल उल्लू (बुवो बुवो), शॉर्ट-ईयर उल्लू (एशियो फ्लेमियस), स्टोलिज्का बुशचैट (सैक्सिकोला मैक्रोरिन्चुस), हेन हैरियर (सर्कस साइनियस), पैल्लिड हैरियर (सर्कस मैक्रोरुस), मोंटेग्यू हैरियर (सर्कस पाइगारगस), पश्चिमी मार्श हैरियर (सर्कस एरुगिनोसस), साइबेरियन स्टोनचैट (सैक्सिकोला मौरस), रिचर्ड्स पिपिट (एंथुस रिचार्डी), लॉन्ग-बिल्लेड पिपिट (एंथुस सिमिलिस), टैनी पिपिट (एंथुस कैम्पेस्ट्रिस), वाटर पिपिट (एंथुस स्पिनोलेट्टा), ब्लैक ड्रोगो (डिकूरस मैक्रोसर्कस), शॉर्ट-टोड स्नेक ईगल (क्रिकटस गैलिकस), पाइड एवोकेट (रिकुर्विरोस्ट्रा एवोसेट्टा), उत्तरी पिटैल (अनास अकुटा), सामान्य कूट (फुलिका एट्रा), वाइट-टेल्ड लैपविंग (वैनैलस ल्यूकुरस), रेड-वॉटल्ड लैपविंग (वैनैलस इंडिकस), येलो-वॉटल्ड लैपविंग (वैनैल्लुस मालावरिकस), सोकियावले लैपविंग (वैनैल्लुस ग्रेगेरियस), लिटिल ग्रेव (टैचीवैप्टस रूफिकोल्लिस), ब्लैक-विंगेड स्टिल्ट (हिमांटोपुस हिमांटोपुस), ग्रे फ्रेंकोलिन (फरांकोलिनस पोंडिकेरिनस), रूफ (फिलोमाचुस पुगनाक्स), गडवाल (अनास स्ट्रेपेरा), यूरोशियन विजोन (मारेका पेनेलोपे), चेन्नट-बिल्लिड सैंड ग्राउज (पेटेरोक्लेस एक्सस्टस) आदि विद्यमान हैं;

और, ताल छाप पर वन्यजीव अभयारण्य में तितली, कीड़े-मकोड़ों और सरीसृपों की महत्वपूर्ण प्रजातियां वाटर स्केवेंजर बीटल (हाइड्रोफिलिडे), प्रेडाशियस डाइविंग बीटल (एगवस वाइकलर), रिफ्ले बीटल (इलमिडे), मार्श बीटल (प्रयोनोसाइफन लिम्बाटा), बैस्विमर (नोटोनेक्टिडे), वाटर बोटमैन (कोरिक्सडे), वाटर स्ट्राइडर (गेरिडे), वाटर स्कोर्पियन (नेपिडे), बटरफ्लाईज़ (रहोपालोकेरा), स्टिक इंसेक्ट (फस्मेटोडिया), प्रयिंग मंटिस (मंटोडिया), ग्रासहोप्पर (कैलीफेरा), लोकुस्ट (शिस्टोकेरका ग्रेगारिया), क्रिकेट (ग्रिलिडे), मेटेलिक बीटल (बुप्रेस्टडे), डंग बीटल (फेनेयस विंडक्स मैकलाचलान), टॉयलेट (विरगिनिया स्कोप्फेड), हनी बी (एपिस मेल्लिफेरा), वासप (वेस्पुला वुलगारिस), किसलोकप्पा (कारपेंटर बी), सैड वासप (वेस्विकिनि), मुडवासप (मुड दुबेर), सिफिक्समोथ (स्फिगिआडिया), फायरफ्लाई (लाम्पीरिदै), किकिदा (किकादीदाइ), टर्मिट (ईसोप्टेरा), कॉक्रोच (ब्लाटेल्ला असाहिनाई), ब्लिस्टर बीटल (मेलोआडिया), पेंटाटोमिड बग (पेंटाटोमाईडे), ब्यूप्रेस्टिड बीटल (बुप्रेस्टिडे), मॉनियर लिर्जार्ड (वारानस ग्रिसेउस डासुदीन), पायथन (केनस पायथन), स्टार्ड कछुआ (गेओचालोने इलेगानस), भारतीय कोवरा (नाजा नाजा), सामान्य भारतीय करैत (बुगारुस कैरुलेउस), रूसेल विपेर (विपेरा रूसेल्ली), साव-सील्ड विपेर (इचिस करिनाटा), जोहन अर्थ बोआ (एरिक्स जोहनी) स्पिनी टैलेड लिर्जार्ड (उरोमस्टिक्स हार्डविकी) धामन या रेट स्लेक (पतयस सुकोसुस), ब्रक्स गेक्को (हेमिडाकुलस बुरोकी), हाउस गेक्को (हेमिडेक्टीलुस फ्लाविविरीडिस), सामान्य गार्डन लिर्जार्ड (कलोटेस वेरसिकोलोर), सामान्य स्किंक (माबुया कैरिनाटा) आदि विद्यमान हैं;

और, ताल छाप पर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर के क्षेत्र को, जिसका विस्तार और सीमाएं इस अधिसूचना के पैराग्राफ 1 में विनिर्दिष्ट हैं, पारिस्थितिकी, पर्यावरणीय और जैव-विविधता की दृष्टि से पारिस्थितिकी संवेदी जोन के रूप में सुरक्षित और संरक्षित करना तथा उक्त पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उद्योगों या उद्योगों की श्रेणियों के प्रचालन तथा प्रसंस्करण को प्रतिषिद्ध करना आवश्यक है;

अतः अब, केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) के साथ पठित पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) (जिसे इस अधिसूचना में इसके पश्चात् पर्यावरण अधिनियम कहा गया है) की उपधारा (1) तथा धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) एवं उपधारा (3) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राजस्थान राज्य में ताल छाप पर वन्यजीव अभयारण्य की सीमा के चारों ओर 0.05 किलोमीटर से 3.4 किलोमीटर तक विस्तारित क्षेत्र को ताल छाप पर वन्यजीव अभयारण्य, पारिस्थितिकी संवेदी जोन (जिसे इसमें इसके पश्चात् पारिस्थितिकी संवेदी जोन कहा गया है) के रूप में अधिसूचित करती है, जिसका विवरण निम्नानुसार है, अर्थात् :-

1. **पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार और सीमाएं.**-(1) पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार ताल छाप पर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर 0.05 किलोमीटर से 3.4 किलोमीटर तक विस्तृत है। पारिस्थितिकी संवेदी जोन का क्षेत्रफल 19 वर्ग किलोमीटर है।

विभिन्न दिशाओं (किलोमीटर) में पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार नीचे दिया गया है:-

दिशा	विस्तार
उत्तर	0.05 किलोमीटर
उत्तर-पूर्व	2.9 किलोमीटर
पूर्व	0.8 किलोमीटर
दक्षिण-पूर्व	0.6 किलोमीटर
दक्षिण	3.4 किलोमीटर
दक्षिण-पश्चिम	1.2 किलोमीटर
पश्चिम	1.6 किलोमीटर
उत्तर-पश्चिम	1.3 किलोमीटर

ताल छाप पर वन्यजीव अभयारण्य की उत्तरी सीमा के निकट से होते हुए नोखा सीकर राजमार्ग के रूप में न्यूनतम विस्तार 0.05 किलोमीटर है। अभयारण्य के उत्तरी भाग के निकट राज्य राजमार्ग के साथ घनी जनसंख्या वाले छाप पर और चारवास ग्राम स्थित है जो जंगली पशुओं के आकस्मिक सड़क दुर्घटना से होने वाली हत्या का कारण बनते हैं। इसलिए, ऐसी दुर्घटनाओं से बचने और वन्यजीव को सुरक्षा प्रदान करने के लिए 2005-06 में राज्य सरकार द्वारा उत्तरी सीमा की ओर 3.5 किलोमीटर लंबी दीवार का निर्माण किया गया था।

- (2) ताल छाप पर वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण **अनुलग्नक-I** में दिया गया है।

(3) सीमा विवरण और अक्षांश और देशांतर के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन के मानचित्र **अनुलघक-IIक, अनुलघक-IIख, अनुलघक-IIग, अनुलघक-IIघ, अनुलघक-IIङ और अनुलघक-IIच** के रूप में संलग्न है।

(4) ताल छाप पर वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भू-निर्देशांक **अनुलघक-III** की सारणी **क** और **ख** में दिए गए हैं।

(5) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची **अनुलघक-IV** के रूप में संलग्न है।

2. पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना- (1) राज्य सरकार, पारिस्थितिकी संवेदी जोन के प्रयोजनों के लिए राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर, स्थानीय व्यक्तियों के परामर्श से और इस अधिसूचना में दिए गए अनुबंधों का पालन करते हुए आंचलिक महायोजना तैयार करेगी और राज्य में सक्षम प्राधिकारी द्वारा विधिवत अनुमोदित करवाएगी।

(2) राज्य सरकार द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना ऐसी रीति से जो इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट किए गए हैं, के अनुसार तथा सुसंगत केंद्रीय और राज्य विधियों के अनुरूप और केंद्रीय सरकार द्वारा जारी मार्गनिर्देशों, यदि कोई हों, द्वारा तैयार होगी।

(3) आंचलिक महायोजना, उक्त योजना में पारिस्थितिकी और पर्यावरणीय बातों को समाकलित करने के लिए राज्य सरकार के निम्नलिखित विभागों के परामर्श से तैयार होगी:-

- (i) पर्यावरण;
- (ii) वन और वन्यजीव;
- (iii) कृषि;
- (iv) राजस्व;
- (v) शहरी विकास;
- (vi) पर्यटन;
- (vii) ग्रामीण विकास;
- (viii) सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण;
- (ix) नगरपालिका;
- (x) पंचायती राज;
- (xi) लोक निर्माण विकास।

(4) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, आंचलिक महायोजना में वर्तमान में अनुमोदित भू-उपयोग, अवसंरचना और क्रियाकलापों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जाएगा तथा आंचलिक महायोजना में सभी अवसंरचनाओं और क्रियाकलापों में सुधार करके उन्हें अधिक दक्ष और पारिस्थितिकी-अनुकूल बनाने की व्यवस्था की जाएगी।

(5) आंचलिक महायोजना में वनरहित और अवक्रमित क्षेत्रों के सुधार, विद्यमान जल निकायों के संरक्षण, जलग्रहण क्षेत्रों के प्रबंधन, जल-संभरों के प्रबंधन, भू-जल के प्रबंधन, मृदा और नमी के संरक्षण, स्थानीय जनता की आवश्यकताओं तथा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण के ऐसे अन्य पहलुओं की व्यवस्था की जाएगी जिन पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

(6) आंचलिक महायोजना में सहायक मानचित्रों के साथ सभी विद्यमान पूजा स्थलों, ग्रामों एवं शहरी वस्तियों, वनों की श्रेणियों एवं किस्मों, कृषि क्षेत्रों, ऊपजाऊ भूमि, उद्यानों एवं उद्यानों की तरह के हरित क्षेत्रों, बागवानी क्षेत्रों, बगीचों, झीलों और अन्य जल निकायों की सीमा के साथ निर्धारण किया जाएगा और योजना में मौजूदा और प्रस्तावित भू-उपयोग की विशेषताओं का ब्यौरा देते हुए मानचित्रों को भी दर्शाया जाएगा।

(7) आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी संवेदी जोन में विकासात्मक क्रियाकलापों को विनियमित करने के लिए प्रक्रिया प्रदान की जाएगी और सारणी में यथासूचीबद्ध पैराग्राफ 4 में प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्रियाकलापों का पालन किया जाएगा। इसमें स्थानीय जनता की आजीविका की सुरक्षा के लिए पारिस्थितिकी-अनुकूल विकास का भी सुनिश्चय एवं संवर्धन किया जाएगा।

(8) आंचलिक महायोजना, क्षेत्रीय विकास योजना की सह-कालिक होगी।

(9) राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित आंचलिक महायोजना, निगरानी समिति के लिए एक संदर्भ दस्तावेज होगी ताकि वह इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार निगरानी के अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके।

3. राज्य सरकार द्वारा किए जाने वाले उपाय.- राज्य सरकार इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय करेगी, अर्थात्:-

(1) **भू-उपयोग.-** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में वनों, बागवानी क्षेत्रों, कृषि क्षेत्रों, मनोरंजन के लिए चिन्हित उद्यानों और खुले स्थानों का वृहद वाणिज्यिक या आवासीय परिसरों या औद्योगिक क्रियाकलापों के लिए प्रयोग या संपरिवर्तन अनुमत नहीं किया जाएगा:

परंतु पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर ऊपर भाग (क), में विनिर्दिष्ट प्रयोजन से भिन्न प्रयोजन के लिए कृषि और अन्य भूमि का संपरिवर्तन, निगरानी समिति की सिफारिश पर और क्षेत्रीय नगर योजना अधिनियम तथा यथा लागू केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों के अधीन तथा इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन से स्थानीय निवासियों की निम्नलिखित आवासीय जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुमत किया जाएगा जैसे:-

- (i) विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ करना और नई सड़कों का निर्माण करना;
- (ii) बुनियादी ढांचों और नागरिक सुविधाओं का संनिर्माण और नवीकरण;
- (iii) प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग;
- (iv) कुटीर उद्योग एवं ग्राम उद्योग; पारिस्थितिकी पर्यटन में सहायक सुविधा भण्डार और स्थानीय सुविधाएं तथा गृह वास; और
- (v) पैराग्राफ-4 में उल्लिखित बढ़ावा दिए गए क्रियाकलाप:

परंतु यह भी कि क्षेत्रीय शहरी नियोजन अधिनियम तथा राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों के अधीन सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन के बिना एवं संविधान के अनुच्छेद 244 के उपबंधों तथा तत्समय प्रवृत्त विधि, जिसके अंतर्गत अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 (2007 का 2) भी आता है, का अनुपालन किए बिना वाणिज्यिक या औद्योगिक विकास क्रियाकलापों के लिए जनजातीय भूमि का प्रयोग अनुमत नहीं होगा:

परंतु यह भी कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाली भूमि के अभिलेखों में हुई किसी त्रुटि को, निगरानी समिति के विचार प्राप्त करने के पश्चात्, राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक मामले में एक बार सुधारा जाएगा और उक्त त्रुटि को सुधारने की सूचना केंद्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को दी जाएगी:

परंतु यह भी कि उपर्युक्त त्रुटि को सुधारने में, इस उप-पैरा में यथा उपबंधित के सिवाय, किसी भी दशा में भू-उपयोग का परिवर्तन शामिल नहीं होगा;

(ख) अनुप्रयुक्त या अनुत्पादक कृषि क्षेत्रों में वनीकरण तथा पर्यावासों की बहाली के कार्यकलापों से पुनः वनीकरण के प्रयास किए जाएंगे।

(2) **प्राकृतिक जल निकाय.-** सभी प्राकृतिक जलमार्गों के जलग्रहण क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और आंचलिक महायोजना में उनके संरक्षण और बहाली की योजना सम्मिलित की जाएगी और राज्य सरकार द्वारा दिशा-निर्देश इस रीति से तैयार किए जाएंगे कि उसमें ऐसे क्षेत्रों में या उसके पास विकास क्रियाकलापों को प्रतिषिद्ध और निर्विधित किया जा सके जो ऐसे क्षेत्रों के लिए हानिकारक हों।

(3) **पर्यटन एवं पारिस्थितिकी पर्यटन.-** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी नए पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलाप या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार पारिस्थितिकी संवेदी जोन संबंधी पर्यटन महायोजना के अनुसार अनुमत होगा;

(ख) पारिस्थितिकी पर्यटन महायोजना राज्य के पर्यावरण और वन विभाग के परामर्श से राज्य के पर्यटन विभाग द्वारा बनायी जाएगी।

(ग) पर्यटन महायोजना आंचलिक महायोजना का घटक होगी।

(घ) पर्यटन महायोजना पारिस्थितिकी संवेदी जोन की वहन क्षमता के अध्ययन के आधार पर तैयार की जायेगी;

(ङ) पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी क्रियाकलाप निम्नानुसार विनियमित किए जाएंगे, अर्थात्:-

- (i) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, किसी होटल या रिजॉर्ट का नया सन्निर्माण अनुमत नहीं किया जाएगा:

परंतु यह, पारिस्थितिकी पर्यटन सुविधाओं के लिए संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर की दूरी से परे पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक पूर्व परिभाषित और अभीहित क्षेत्रों में पर्यटन महायोजना के अनुसार, नए होटलों और रिजॉर्ट की स्थापना अनुमत होगी;

(ii) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अन्दर सभी नए पर्यटन क्रियाकलापों या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार, केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी दिशानिर्देशों तथा पारिस्थितिकी पर्यटन, पारिस्थितिकी-शिक्षा और पारिस्थितिकी-विकास पर बल देने वाले राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण द्वारा जारी पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी दिशानिर्देशों (समय-समय पर यथा संशोधित) के अनुसार होगा;

(iii) आंचलिक महायोजना का अनुमोदन होने तक, पर्यटन के विकास और विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों के विस्तार को वास्तविक स्थल-विशिष्ट संवीक्षा तथा निगरानी समिति की सिफारिश के आधार पर संबंधित विनियामक प्राधिकरणों द्वारा अनुमत किया जाएगा और पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए होटल/ रिजॉर्ट या वाणिज्यिक प्रतिष्ठान का संनिर्माण अनुमत नहीं होगा।

(4) **प्राकृतिक विरासत.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले बहुमूल्य प्राकृतिक विरासत के सभी स्थलों जैसे कि जीन पूल रिजर्व क्षेत्र, शैल संरचना, जल प्रपात, झरने, दर्रे, उपवन, गुफाएं, स्थल, वनपथ, रोहण मार्ग, उत्प्रपात आदि की पहचान की जाएगी और उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।

(5) **मानव निर्मित विरासत स्थल.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भवनों, संरचनाओं, कलाकृति-क्षेत्रों तथा ऐतिहासिक, स्थापत्य संबंधी, सौंदर्यात्मक और सांस्कृतिक महत्व के क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और उनके संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।

(6) **ध्वनि प्रदूषण.**— पर्यावरण अधिनियम और उसके तहत समय समय पर यथासंशोधित नियमों के अधीन ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम, 2000 में नियत उपबंधों के अनुसार पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ध्वनि प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण किया जाएगा।

(7) **वायु प्रदूषण.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में, वायु प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण, वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 (1981 का 14) और उसके अधीन बनाए गए नियमों और उनके संशोधनों के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(8) **बहिस्त्राव का निस्सरण.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में शोधित बहिस्त्राव का निस्सरण, पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन आने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण के निस्सरण के लिए साधारण मानकों या राज्य सरकार द्वारा नियत मानकों, जो भी अधिक कठोर हो, के उपबंधों के अनुसार होगा।

(9) **ठोस अपशिष्ट.**— ठोस अपशिष्ट का निपटान एवं प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-

क. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ठोस अपशिष्ट का निपटान और प्रबंधन भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं. का.आ. 1357(अ), दिनांक 8 अप्रैल, 2016 के तहत प्रकाशित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा; अकार्बनिक पदार्थों का निपटान पारिस्थितिकी संवेदी जोन से बाहर चिन्हित किए गए स्थानों पर पर्यावरण-अनुकूल रीति से किया जाएगा;

ख. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन (ईएसएम) अनुमत किया जायेगा।

(10) **जैव चिकित्सा अपशिष्ट.**— जैव चिकित्सा अपशिष्ट का प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-

क. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में जैव चिकित्सा अपशिष्ट का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की अधिसूचना सं.सा.का.नि. 343 (अ), तारीख 28 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा;

ख. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप जैव चिकित्सा अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन (ईएसएम) अनुमत किया जायेगा।

(11) **प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन.**— पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 340(अ), तारीख 18 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(12) **निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 317(अ), तारीख 29 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित संनिर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(13) **ई-अपशिष्ट.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ई-अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित तथा समय-समय पर यथा संशोधित ई-अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(14) **वाहन-यातायात.-** वाहन-यातायात को पर्यावास-अनुकूल तरीके से विनियमित किया जाएगा और इस संबंध में आंचलिक महायोजना में विशेष उपबंध शामिल किए जाएंगे और आंचलिक महायोजना के तैयार होने और राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी से अनुमोदित होने तक, निगरानी समिति प्रासंगिक अधिनियमों और उनके तहत बनाए गए नियमों एवं विनियमों के अनुसार वाहन-यातायात के अनुपालन की निगरानी करेगी।

(15) **वाहन जनित प्रदूषण.-** वाहन जनित प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण लागू विधियों के अनुसार किया जाएगा और स्वच्छतर ईंधन के उपयोग के लिए प्रयास किए जाएंगे।

(16) औद्योगिक इकाइयां.-

(क) राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन पर या उसके पश्चात पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर कोई नए प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना की अनुज्ञा नहीं दी जाएगी।

(ख) केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 द्वारा जारी समय-समय पर यथा संशोधित मार्गदर्शक सिद्धान्तों में उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार, जब तक कि अधिसूचना में इस प्रकार विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों को अनुज्ञात किया जाएगा और इसके अतिरिक्त, गैर प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाएगा।

(17) पहाड़ी ढलानों का संरक्षण.- पहाड़ी ढलानों का संरक्षण निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) आंचलिक महायोजना में पहाड़ी ढलानों के उन क्षेत्रों को दर्शाया जाएगा जिनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी;

(ख) जिन ढलानों या विद्यमान खड़ी पहाड़ी ढलानों में अत्यधिक भू-क्षरण होता है उनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी।

4. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्रतिषिद्ध या विनियमित किए जाने वाले क्रियाकलापों की सूची.- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी क्रियाकलाप पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बने नियमों के उपबंधों जिसमें तटीय विनियमन जोन (सी आर जेड), 2011 एवं पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (ई आई ए) अधिसूचना, 2006 शामिल है सहित वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 (1980 का 69), भारतीय वन अधिनियम, 1927 (1927 का 16), वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (1972 का 53) तथा उनमें किए गए संशोधनों के अनुसार शासित होंगे और नीचे दी गई सारणी में विनिर्दिष्ट रीति से विनियमित होंगे, अर्थात्:-

सारणी

क्र.सं. (1)	क्रियाकलाप (2)	विवरण (3)
क. प्रतिषिद्ध क्रियाकलाप		
1.	वाणिज्यिक खनन, पत्थर उत्खनन और अपघर्षण इकाइयां।	(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत वास्तविक स्थानीय निवासियों की घरेलू आवश्यकताओं जिसमें मकानों के संनिर्माण या मरम्मत के लिए धरती को खोदना सम्मिलित है, के सिवाय सभी प्रकार के नए और विद्यमान खनन (लघु और वृहत खनिज), पत्थर उत्खनन और अपघर्षण इकाइयां तत्काल प्रभाव से प्रतिषिद्ध होंगी; (ख) खनन प्रचालन, 1995 की रिट याचिका (सिविल) सं. 202 में टी.एन. गौडावर्मन थिरुमूलपाद बनाम भारत संघ के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय के 4 अगस्त, 2006 के आदेश और 2012 की रिट याचिका (सिविल) सं. 435 में गोवा फाउंडेशन बनाम भारत संघ के मामले में तारीख 21 अप्रैल, 2014 के आदेश के अनुसरण में होगा।
2.	प्रदूषण (जल, वायु, मृदा, ध्वनि,	पारिस्थितिकी संवेदी जोन में कोई नया उद्योग लगाने और वर्तमान प्रदूषणकारी

	आदि) उत्पन्न करने वाले उद्योगों की स्थापना।	उद्योगों का विस्तार करने की अनुमति नहीं होगी। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 में जारी समय-समय पर यथा संशोधित मार्गदर्शक सिद्धान्तों में उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार, जब तक कि अधिसूचना में ऐसा विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों को अनुज्ञात किया जाएगा और गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाएगा।
3.	बृहत जल विद्युत परियोजनाओं की स्थापना।	प्रतिषिद्ध।
4.	किसी परिसंकटमय पदार्थ का प्रयोग या उत्पादन या प्रसंस्करण।	प्रतिषिद्ध।
5.	प्राकृतिक जल निकायों या भूमि क्षेत्र में अनुपचारित बहिःस्रावों का निस्सरण।	प्रतिषिद्ध।
6.	नई आरा मिलों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर नई आरा मिलों की स्थापना या विद्यमान आरा मिलों का विस्तार अनुज्ञात नहीं होगा।
7.	ईंट भट्टों की स्थापना करना।	प्रतिषिद्ध।
8.	फर्मों, कारपोरेट और कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक पशुधन संपदा और कुक्कुट फार्मों की स्थापना।	प्रतिषिद्ध।
9.	ठोस और जैव चिकित्सा अपशिष्ट के लिए ठोस अपशिष्ट निपटान स्थल और सामान्य भस्मीकरण सुविधा की स्थापना।	प्रतिषिद्ध।
ख. विनियमित क्रियाकलाप		
10.	होटलों और रिसोर्टों की वाणिज्यिक स्थापना।	पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलापों हेतु लघु अस्थायी संरचनाओं के निर्माण के सिवाय, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, नए वाणिज्यिक होटलों और रिसोर्टों की स्थापना अनुमत नहीं होगी: परंतु, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर बाहर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, सभी नए पर्यटन क्रियाकलाप करने या विद्यमान क्रियाकलापों का विस्तार पर्यटन महायोजना और लागू दिशानिर्देशों के अनुसार होगा।
11.	निर्माण क्रियाकलाप।	(क) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक जो भी निकट हो, किसी भी प्रकार का नया वाणिज्यिक निर्माण अनुमत नहीं किया जाएगा: परंतु स्थानीय लोगों को पैराग्राफ 3 के उप पैराग्राफ (1) में सूचीबद्ध क्रियाकलापों सहित उनके उपयोग के लिए उनकी भूमि में स्थानीय निवासियों की आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करने लिए निर्माण करने की अनुमति भवन उपविधियों के अनुसार दी जाएगी। परन्तु ऐसे लघु उद्योगों जो प्रदूषण उत्पन्न नहीं करते हैं, से संबंधित निर्माण क्रियाकलाप विनियमित किए जाएंगे और लागू नियमों और विनियमों, यदि कोई हों, के अनुसार सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति से ही न्यूनतम पर रखे जाएंगे।

		(ख) एक किलोमीटर से आगे आंचलिक महायोजना के अनुसार विनियमित होंगे।
12.	गैर-प्रदूषणकारी लघु उद्योग।	फरवरी, 2016 में केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी, समय-समय पर यथा संशोधित उद्योगों में वर्गीकरण के अनुसार गैर-प्रदूषणकारी उद्योग और अपरिसंकटमय, लघु और सेवा उद्योग, कृषि, पुष्प कृषि, बागवानी या पारिस्थितिकी संवेदी जोन से देशी सामग्री से उत्पादों को उत्पन्न करने वाले कृषि आधारित उद्योग सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुज्ञात होंगे।
13.	वृक्षों की कटाई।	(क) राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति के बिना वन भूमि या सरकारी या राजस्व या निजी भूमि पर वृक्षों की कटाई नहीं होगी। (ख) वृक्षों की कटाई केंद्रीय या संबंधित राज्य के अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार विनियमित होगी।
14.	वन उत्पादों और गैर काष्ठ वन उत्पादों (एन टी एफ पी) का संग्रहण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
15.	विद्युत और संचार टॉवर लगाने, तार-बिछाने तथा अन्य बुनियादी ढांचे की व्यवस्था।	लागू विधियों के अधीन विनियमित (भूमिगत केवल बिछाने को बढ़ावा दिया जाएगा) होगा।
16.	नागरिक सुविधाओं सहित बुनियादी ढांचा।	लागू विधियों, नियमों और विनियमनों और उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
17.	विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ बनाना और नई सड़कों का निर्माण।	लागू विधियों, नियमों और विनियमनों और उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
18.	पर्यटन से संबंधित अन्य क्रियाकलाप जैसे गर्म वायु गुब्बारे, हेलीकॉप्टर, ड्रोन, माइक्रोलाइट्स, आदि द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन क्षेत्र के ऊपर से उड़ना जैसे क्रियाकलाप करना।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
19.	पहाड़ी ढलानों और नदी तटों का संरक्षण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
20.	रात्रि में वाहन यातायात का संचलन।	लागू विधियों के अधीन वाणिज्यिक प्रयोजन के लिए विनियमित होगा।
21.	स्थानीय समुदायों द्वारा अपनायी जा रही वर्तमान कृषि और बागवानी पद्धतियों के साथ डेयरियां, दुग्ध उत्पादन, जल कृषि और मत्स्य पालन।	स्थानीय जनता के प्रयोग के लिए लागू विधियों के अधीन अनुमत होंगे।
22.	प्राकृतिक जल निकायों या भू क्षेत्र में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह का निस्सरण।	जल निकायों में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह के निस्सरण से बचा जाएगा और उपचारित अपशिष्ट जल के पुनर्चक्रण और पुनःउपयोग के प्रयास किए जाएंगे तथा उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह का निस्सरण लागू विधियों के अनुसार विनियमित किया जाएगा।
23.	सतही और भूजल का वाणिज्यिक निष्कर्षण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।

24.	कृषि और अन्य उपयोग के लिए खुले कुआ, बोर कुआ, आदि।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
25.	ठोस अपशिष्ट का प्रबंधन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
26.	विदेशी प्रजातियों को लाना।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
27.	पारिस्थितिकी पर्यटन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
28.	पोलिथीन बैगों का प्रयोग।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
29.	वाणिज्यिक संकेत बोर्ड और होर्डिंग का प्रयोग।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
ग.संवर्धित क्रियाकलाप		
30.	वर्षा जल संचय।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
31.	जैविक खेती।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
32.	सभी गतिविधियों के लिए हरित प्रौद्योगिकी का अंगीकरण।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
33.	ग्रामीण कारीगरी सहित कुटीर उद्योग।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
34.	नवीकरणीय ऊर्जा और ईंधन का प्रयोग।	वायोगैस, सौर प्रकाश इत्यादि को सक्रिय बढ़ावा दिया जाएगा।
35.	कृषि वानिकी।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
36.	बागान लगाना और जड़ी बूटियों का रोपण।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
37.	पारिस्थितिकी अनुकूल यातायात का प्रयोग।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
38.	कौशल विकास।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
39.	अवक्रमित भूमि/वनों/ पर्यावासों की बहाली।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
40.	पर्यावरण के प्रति जागरूकता।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।

5. पारिस्थितिकी-संवेदी जोन अधिसूचना की निगरानी के लिए निगरानी समिति.- पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 3 की उपधारा (3) के तहत इस अधिसूचना के उपबंधों की प्रभावी निगरानी के लिए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा एक निगरानी समिति का गठन करेगी जो निम्नलिखित से मिलकर बनेगी, अर्थात्:

क्र.सं.	निगरानी समिति का गठन	पद
1.	जिला कलेक्टर, चुरू	अध्यक्ष;
2.	पर्यावरण के क्षेत्र में कार्यरत गैर-सरकारी संगठन का एक प्रतिनिधि राजस्थान सरकार द्वारा नामित किया जाएगा	सदस्य;
3.	पारिस्थितिकी और पर्यावरण के क्षेत्र में एक विशेषज्ञ राजस्थान सरकार द्वारा नामित किया जाएगा	सदस्य;
4.	लोक निर्माण विभाग के जिला स्तरीय अधिकारी	सदस्य;
5.	नगर नियोजन विभाग के जिला स्तरीय अधिकारी	सदस्य;
6.	उद्योग विभाग के जिला स्तरीय अधिकारी	सदस्य;

7.	राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी (आरओ)	सदस्य;
8.	वन्यजीव वार्डन, बीकानेर	सदस्य;
9.	जैव विविधता के क्षेत्र में एक विशेषज्ञ	सदस्य;
10.	रेंज वन अधिकारी, ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य	सदस्य;
11.	सहायक वन संरक्षक, ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य	सदस्य;
12.	उप वन संरक्षक, चुरू	सदस्य- सचिव

6. विचारार्थ विषय.-

- (1) निगरानी समिति इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुपालन की निगरानी करेगी।
- (2) निगरानी समिति का कार्यकाल अगले आदेश होने तक होगा, परंतु यह कि समिति के गैर-सरकारी सदस्यों को समय-समय पर राज्य सरकार द्वारा मनोनीत किया जाएगा।
- (3) ऐसे क्रियाकलापों जिन्हें भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 1533(अ), तारीख 14 सितंबर, 2006 की अनुसूची में सम्मिलित किया गया है और जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन में आते हैं, इस अधिसूचना के पैराग्राफ 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध गतिविधियों के सिवाय, आने वाले ऐसे क्रियाकलापों की वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उन्हें उक्त अधिसूचना के उपबंधों के अधीन पूर्व पर्यावरण अनापत्ति लेने के लिए केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को निर्दिष्ट किया जाएगा।
- (4) इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध क्रियाकलापों के सिवाय, भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का.आ. 1533(अ), तारीख 14 सितंबर, 2006 की अधिसूचना की अनुसूची के अधीन ऐसे क्रियाकलापों, जिन्हें सम्मिलित नहीं किया गया है, परंतु जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन में आते हैं, ऐसे क्रियाकलापों की वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उसे संबद्ध विनियामक प्राधिकरणों को निर्दिष्ट किया जाएगा।
- (5) निगरानी समिति का सदस्य-सचिव या संबंधित उपायुक्तों ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध, जो इस अधिसूचना के किसी उपबंध का उल्लंघन करता है, पर्यावरण अधिनियम की धारा 19 के अधीन परिवाद दायर करने के लिए सक्षम होगा।
- (6) निगरानी समिति संबंधित विभागों के प्रतिनिधियों या विशेषज्ञों, औद्योगिक संघों के प्रतिनिधियों या संबंधित पक्षों को, प्रत्येक मामले में आवश्यकता के अनुसार, अपने विचार-विमर्श में सहायता के लिए आमंत्रित कर सकेगी।
- (7) निगरानी समिति प्रत्येक वर्ष 31 मार्च की स्थिति के अनुसार अपनी वार्षिक कार्रवाई रिपोर्ट, राज्य के मुख्य वन्यजीव वार्डन को, अनुलग्नक V में दिए गए प्रपत्र के अनुसार, उस वर्ष की 30 जून तक प्रस्तुत करेगी।
- (8) केन्द्रीय सरकार का पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय निगरानी समिति को उसके कार्य-कलापों के प्रभावी निर्वहन के लिए ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह उचित समझे।

7. अतिरिक्त उपाय.- इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार, अतिरिक्त उपाय, यदि कोई हों, विनिर्दिष्ट कर सकेंगी।

8. उच्चतम न्यायालय, आदि के आदेश.- इस अधिसूचना के उपबंध भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालय या राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा पारित किए गए या पारित किए जाने वाले आदेशों, यदि कोई हों, के अध्वधीन होंगे।

[फा. सं. 25/09/2019-ईएसजेड]

डॉ. सतीश चन्द्र गढ़कोटी, वैज्ञानिक 'जी'

अनुलग्नक- I

ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण

पूर्वी सीमा: रेलवे स्टेशन छापर से उस बिंदु तक किशनगढ़-हनुमानगढ़ मेगा राजमार्ग जहां देवानी-गुलेरियन की सीमा राजस्व ग्राम राजमार्ग को आर पार करके विभाजित करती है।

दक्षिणी सीमा: मेगा राजमार्ग से उस बिंदु तक देवानी-गुलेरियन और सूरवास- गुलेरियन ग्रामों की राजस्व ग्राम सीमा तक है जहां सूरवास-सुजागढ़ कट्टानी रास्ता के राजस्व सीमा को आर-पार करके विभाजित करती है; और, सूरवास-सुजानगढ़ कट्टानी रास्ता सूरवास ग्राम में उसके आरंभ स्थान तक।

पश्चिमी सीमा: चाड़वास-बीदसार सड़क पर सूरवास ग्राम से पहली सड़क मोड़ तक।

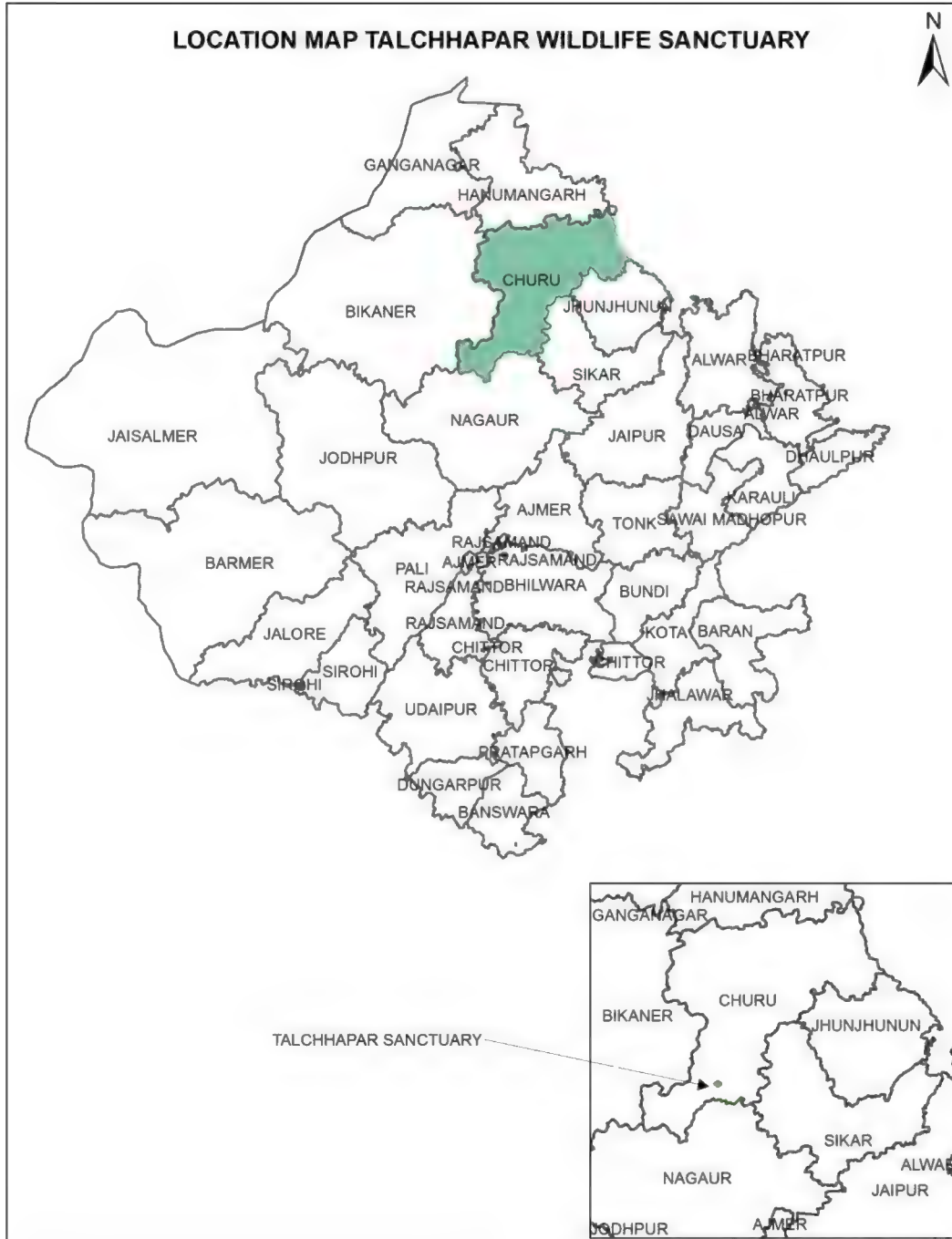
उत्तरी सीमा: चाड़वास से ताल छापर रेलवे स्टेशन मेगा राजमार्ग तक।

पारिस्थितिकी संवेदी जोन में शामिल भूमि के भूमि उपयोग पैटर्न:

1. **रिजर्व वन:-** 719 हेक्टेयर अधिसूचित और ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य के रूप में प्रबंधित किया जा रहा है।
2. **वन भूमि:-** अभयारण्य की पश्चिम सीमा के समीपवर्ती 78 हेक्टेयर भूमि।
3. **लवण पैन:-** अभयारण्य की पश्चिम सीमा के समीपवर्ती 450 हेक्टेयर, जो औद्योगिक विभाग के नियंत्रण के अधीन प्रबंधित किया जा रहा है।
4. **निजी कृषि भूमि, राजस्व भूमि, स्कूल, गांधीसागर, शाही कोठी और अलग-अलग आवास आदि:-** लगभग 1150 हेक्टेयर।
5. **अभयारण्य के पूर्व:-** गौशाला छापर, लगभग 300 हेक्टेयर कुल: लगभग 2700 हेक्टेयर।

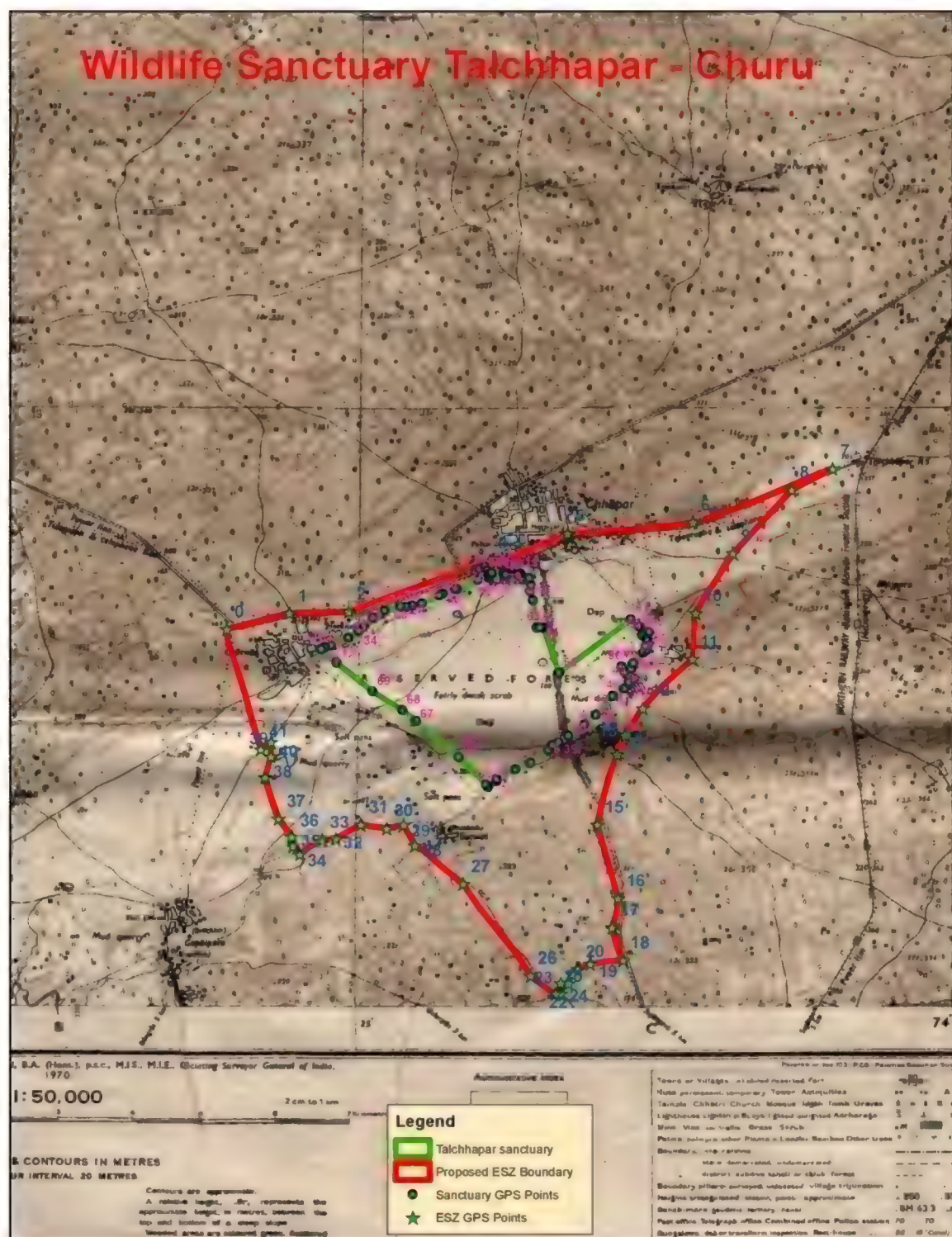
अनुलग्नक- IIक

ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन का अवस्थान मानचित्र

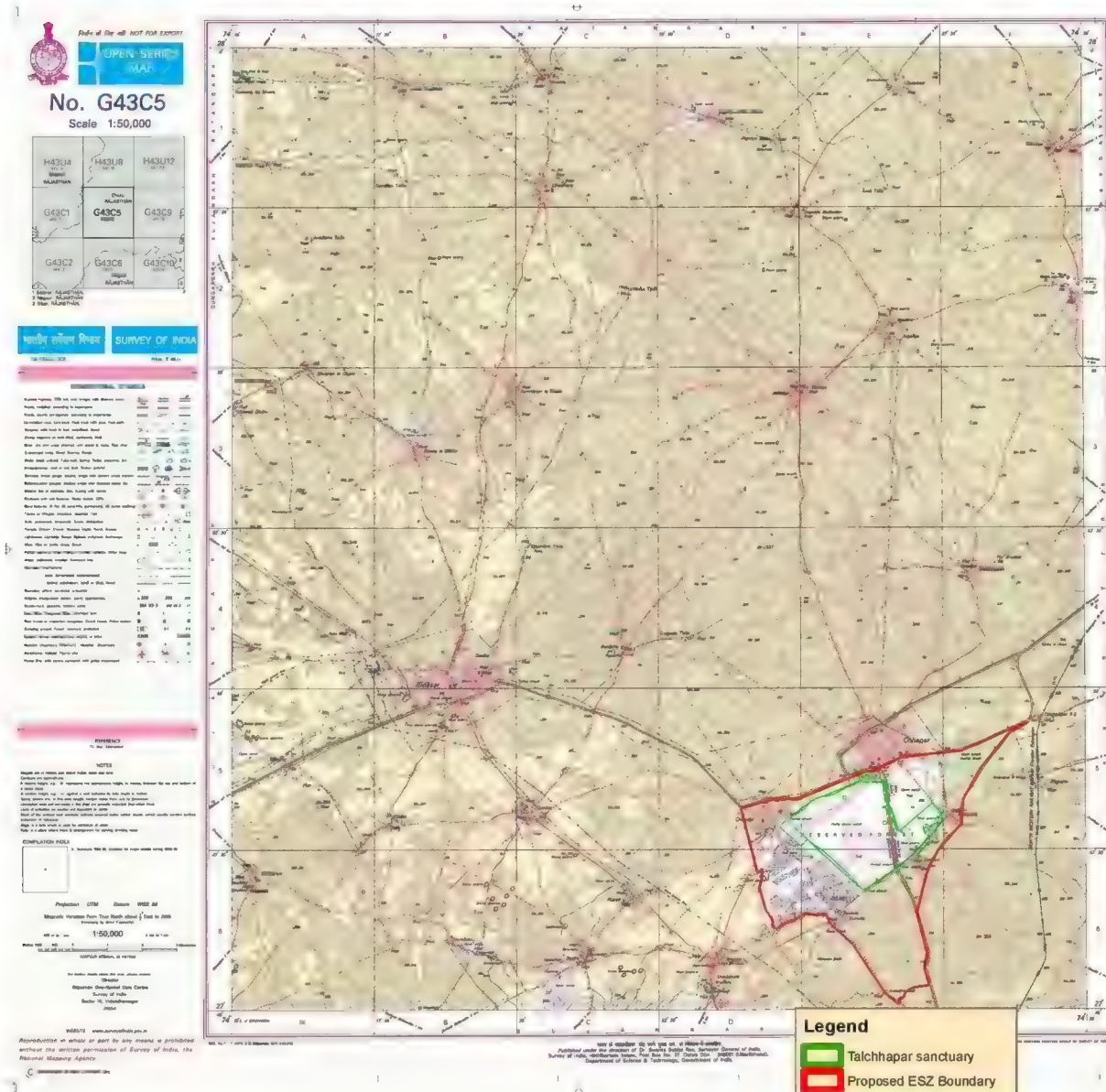


अनुलग्नक- ॥ख

भारतीय सर्वेक्षण (एसओआई) टोपोशीट पर मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ संरक्षित क्षेत्र के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र

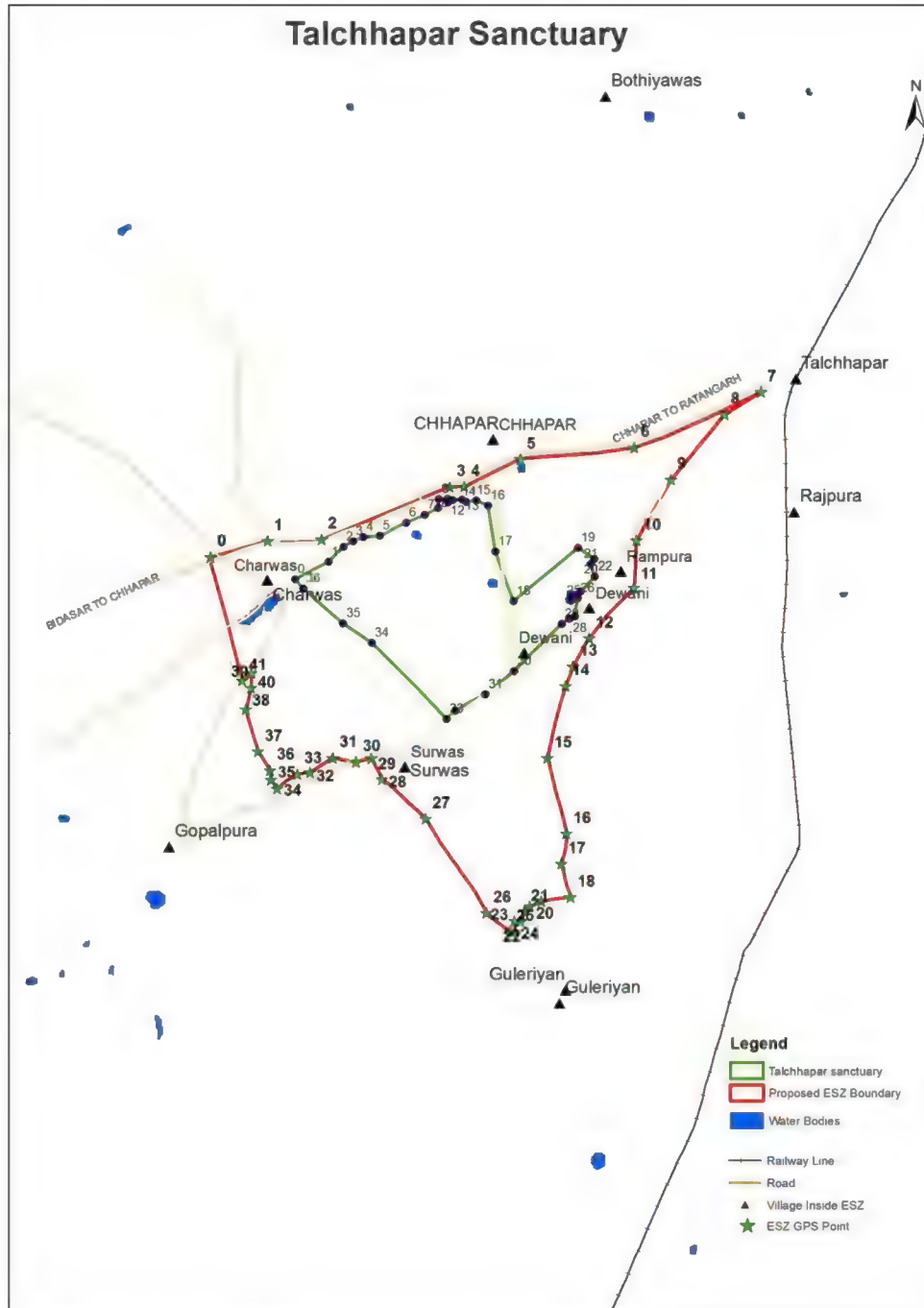


भारतीय सर्वेक्षण (एसओआई) टोपोशीट पर ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



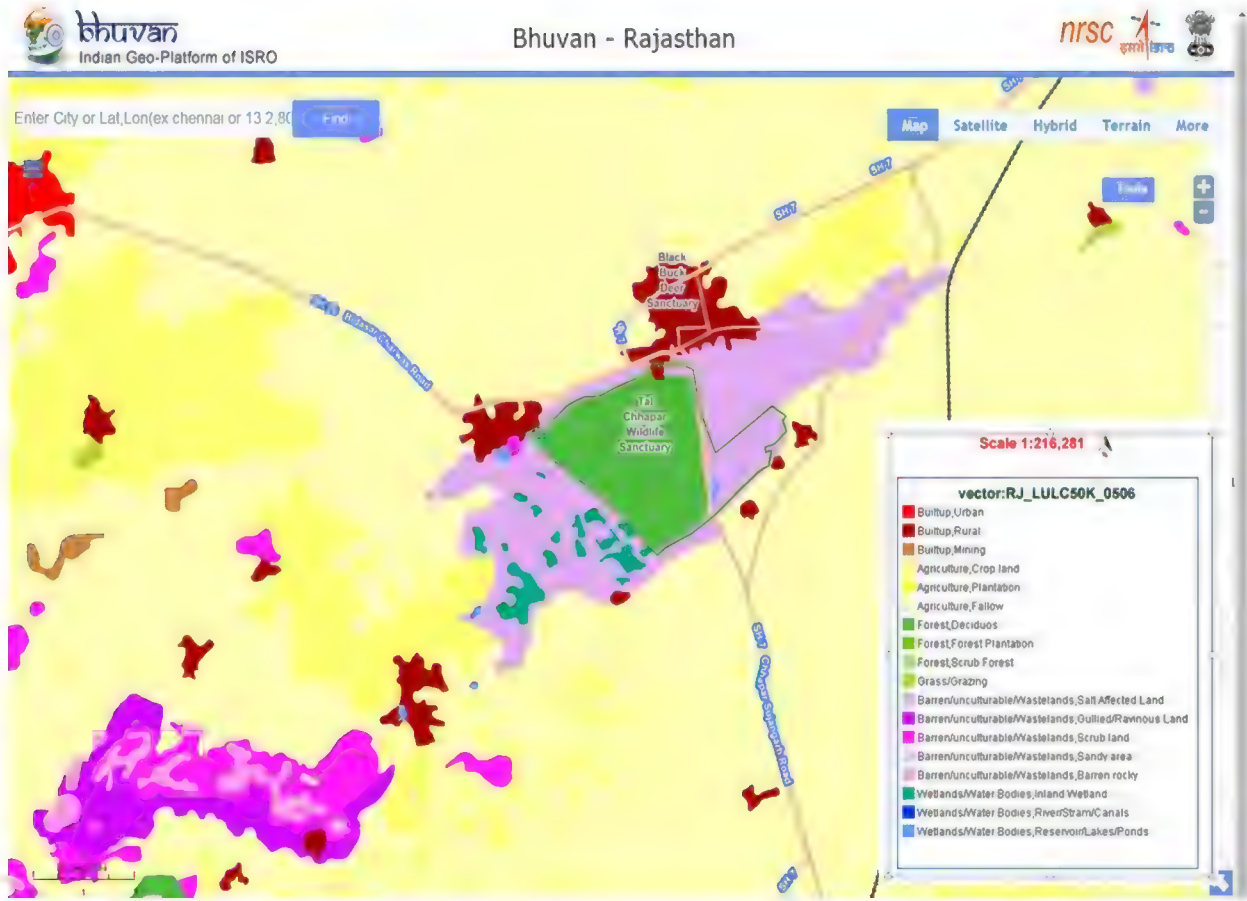
अनुलग्नक- IIघ

मुख्य बिंदुओं सहित ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन का मानचित्र



अनुलग्नक- IIड

ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन का भूमि उपयोग मानचित्र



अनुलग्नक II च

ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन का गूगल मानचित्र

**अनुलग्नक-III**

सारणी क: ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य के मुख्य अवस्थानों के भू-निर्देशांक

ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य					
क्र.सं	अक्षांश	देशांतर	क्र.सं.	अक्षांश	देशांतर
1	उ 27° 48' 04.1"	पू 74° 24' 57.7"	22	उ 27° 48' 03.1"	पू 74° 27' 26.9"
5	उ 27° 48' 20.1"	पू 74° 25' 29.4"	23	उ 27° 47' 51.1"	पू 74° 27' 20.0"
7	उ 27° 48' 28.3"	पू 74° 25' 51.7"	24	उ 27° 47' 49.5"	पू 74° 27' 14.0"
8	उ 27° 48' 32.8"	पू 74° 26' 02.5"	25	उ 27° 47' 46.5"	पू 74° 27' 15.7"
15	उ 27° 48' 36.0"	पू 74° 26' 23.8"	26	उ 27° 47' 48.5"	पू 74° 27' 19.1"
16	उ 27° 48' 33.8"	पू 74° 26' 28.0"	29	उ 27° 47' 38.5"	पू 74° 27' 15.8"
17	उ 27° 48' 09.1"	पू 74° 26' 34.9"	30	उ 27° 47' 09.8"	पू 74° 26' 39.6"
18	उ 27° 47' 46.3"	पू 74° 26' 43.0"	31	उ 27° 46' 57.8"	पू 74° 26' 21.2"

19	उ 27° 48' 13.1"	पू 74° 27' 19.0"	32	उ 27° 46' 52.0"	पू 74° 26' 11.7"
20	उ 27° 48' 06.6"	पू 74° 27' 28.1"	33	उ 27° 46' 49.1"	पू 74° 26' 07.6"

सारणी ख: पारिस्थितिकी संवेदी जोन के मुख्य अवस्थानों के भू-निर्देशांक

ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन					
क्र.सं.	अक्षांश	देशांतर	क्र.सं.	अक्षांश	देशांतर
0	उ 27° 48' 08.4"	पू 74° 23' 56.5"	18	उ 27° 45' 22.4"	पू 74° 27' 14.8"
1	उ 27° 48' 16.2"	पू 74° 24' 28.0"	22	उ 27° 45' 10.6"	पू 74° 26' 47.5"
2	उ 27° 48' 17.0"	पू 74° 24' 57.6"	23	उ 27° 45' 10.9"	पू 74° 26' 43.9"
4	उ 27° 48' 42.8"	पू 74° 26' 16.3"	24	उ 27° 45' 05.4"	पू 74° 26' 43.9"
5	उ 27° 48' 55.7"	पू 74° 26' 45.3"	25	उ 27° 45' 05.6"	पू 74° 26' 41.2"
6	उ 27° 49' 01.9"	पू 74° 27' 49.9"	26	उ 27° 45' 14.6"	पू 74° 26' 28.5"
7	उ 27° 49' 28.9"	पू 74° 28' 59.8"	27	उ 27° 45' 49.2"	पू 74° 26' 02.6"
8	उ 27° 49' 18.1"	पू 74° 28' 39.5"	28	उ 27° 46' 19.8"	पू 74° 25' 30.9"
9	उ 27° 48' 46.2"	पू 74° 28' 10.1"	30	उ 27° 46' 30.1"	पू 74° 25' 25.1"
10	उ 27° 48' 15.7"	पू 74° 27' 50.8"	32	उ 27° 46' 30.4"	पू 74° 25' 03.8"
11	उ 27° 47' 53.4"	पू 74° 27' 49.6"	33	उ 27° 46' 15.4"	पू 74° 24' 33.0"
12	उ 27° 47' 15.0"	पू 74° 27' 16.1"	35	उ 27° 46' 24.3"	पू 74° 24' 29.3"
13	उ 27° 47' 05.5"	पू 74° 27' 11.9"	37	उ 27° 46' 33.4"	पू 74° 24' 22.6"
14	उ 27° 46' 56.7"	पू 74° 27' 08.8"	38	उ 27° 46' 51.4"	पू 74° 24' 16.4"
15	उ 27° 46' 30.3"	पू 74° 27' 02.0"	39	उ 27° 47' 04.6"	पू 74° 24' 18.7"
16	उ 27° 45' 53.4"	पू 74° 27' 12.5"	40	उ 27° 47' 11.8"	पू 74° 24' 18.9"
17	उ 27° 45' 38.6"	पू 74° 27' 09.7"	41	उ 27° 47' 24.9"	पू 74° 24' 13.8"

अनुलग्नक-IV

ताल छापर वन्यजीव अभयारण्य के चारों ओर पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत स्थित क्षेत्र वाले ग्रामों की भू-निर्देशांकों सहित सूची

क्र.सं.	जिला/प्रभाग	तहसील	ग्राम का नाम	अक्षांश	देशांतर
i.	चुरू	सुजानगढ़	चाड़वास	27° 48' 02.1" उ	74° 24' 35.3" पू
ii.	चुरू	सुजानगढ़	देवानी	27° 47' 29.4" उ	74° 27' 16.8" पू
iii.	चुरू	सुजानगढ़	रामपुर	27° 48' 00.8" उ	74° 27' 39.5" पू
iv.	चुरू	सुजानगढ़	सूरवास	27° 46' 22.7" उ	74° 25' 31.0" पू
v.	चुरू	सुजानगढ़	छापर	27° 48' 39.9" उ	74° 26' 14.0" पू

अनुलग्नक-V

की गई कार्रवाई सम्बन्धी रिपोर्ट का प्रपत्र - पारिस्थितिकी संवेदी जोन की निगरानी समिति

- वैठकों की संख्या और तारीख:
- वैठकों का कार्यवृत्त : कृपया मुख्य उल्लेखनीय बिंदुओं का वर्णन करें। बैठक के कार्यवृत्त को एक पृथक अनुलग्नक में संलग्न करें:
- पर्यटन महायोजना सहित आंचलिक महायोजना की तैयारी की स्थिति:

4. भू-अभिलेखों की स्पष्ट त्रुटियों के सुधार के लिए निबटाए गए मामलों का सार(पारिस्थितिकी-संवेदी जोन वार)। विवरण अनुलग्नक के रूप में संलग्न किया जाए:
 5. पर्यावरण प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 के अधीन आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार। विवरण एक पृथक अनुलग्नक के रूप में संलग्न किया जाए:
 6. पर्यावरण प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 के अधीन न आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार:
- विवरण एक पृथक अनुलग्नक के रूप में संलग्न करें:
7. पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन दर्ज की गई शिकायतों का सार:
 8. कोई अन्य महत्वपूर्ण मामला।

MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE

NOTIFICATION

New Delhi, the 14th September, 2021

S.O. 3721(E).—The following draft of the notification, which the Central Government proposes to issue in exercise of the powers conferred by sub-section (1), read with clause (v) and clause (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) is hereby published, as required under sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, for the information of the public likely to be affected thereby; and notice is hereby given that the said draft notification shall be taken into consideration on or after the expiry of a period of sixty days from the date on which copies of the Gazette containing this notification are made available to the public;

Any person interested in making any objections or suggestions on the proposals contained in the draft notification may forward the same in writing, for consideration of the Central Government within the period so specified to the Secretary, Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Indira Paryavaran Bhawan, Jorbagh Road, Aliganj, New Delhi-110 003, or send it to the e-mail address of the Ministry at esz-mef@nic.in

Draft Notification

WHEREAS, the Tal Chhapar Wildlife Sanctuary is situated in the lower reaches of Gopalpuru hills in the Northern Rajasthan and is spread over an area of 7.1977 square kilometers in Sujangarh Tehsil of Churu District in the state of Rajasthan.

AND WHEREAS, the Tal Chhapar Wildlife Sanctuary was declared a 'Reserved area' for the protection of wild animals and birds in 1962, *vide* notification number F.7 (379) Revenue A/59 dated 19.09.62. The area was finally notified as 'Reserved forest' *vide* order F7 (118) Revenue/66 dated 11.05.1966 under section 20 of Rajasthan Forest Act, 1953 and published in Gazette of Rajasthan on 08.09.1966. The total area of the block was 2014.25 acre (815 hectares) during the time of final notification and was further amended *vide* gazette notification number F (379) revenue/A/71 dated 13.07.1971. Out of total area, 96 hectares of land was allotted to the salt miners and farmer of nearby village, by collector Churu in 1983. Under the Wildlife (Protection) Act 1972, the district collector of Churu had decided the Rights of people and finally declared it as a sanctuary *vide* his order F12 (2) (304) Revenue/97/13/98 dated 23.08.1998;

AND WHEREAS, the Tal Chhapar Wildlife Sanctuary provide habitat to rare, endangered and threatened species of flora and fauna such as motha grass (*Cyperus rotundus*), red phalarope (*Phalaropus fulicarius*), Chinese pond heron (*Ardeola bacchus*), desert monitor lizard (*Varanus griseus*), spiny tailed lizard (*Uromastix hardwickii*), adoosa (*Adhatoda vasica*), lal satta (*Boerhania diffusa*), phog (*Calligonum polygonoides*), ban tulsi (*Ocimum sanctum*), red-necked falcon (*Falco chicquera*), laggar falcon (*Falco jugger*), Stoliczka's bushchat (*Saxicola macrorhynchus*) and endemic species of Spotted Creeper (*Salpornis spilonotus*) is also present in the area;

AND WHEREAS, the sanctuary has ideal Mothai Grass land comprised of diversified perennial species of excellent food value along with scattered bushes of thorny desert flora;

AND WHEREAS, the major vegetation present in the area includes grasses such as *Cyperus rotundus*, *Cyperus bulbosus*, *Cenchrus calliticus*, *Cenchrus biflorus*, *Cenchrus ciliaris*, *Dicanthium species*, *Cyobopogon*, *Jwarincosa aristida*, *Heloxylon selicornium*, *Salhara indica etc.* Other dominate species of trees, shrubs and herbs are baunli (*Acacia iacquermonti*), chonlai (*Amaranthus viridis*), bui (*Aerva tomentosa, burm*), bui (*Aerva javanica*, satyanashi (*Arqernone mexicana*), palak (*Beta vulgarie, Linn*), lal satta (*Boerhania diffusa*), boganvel (*Bougainvillea spectabilis*), boganvel (*Bougainvillea geabra*), karaunda (*Carissa spinarum*), aak (*Calotropis procera, Ait*), akra (*Calotropis gigantea, Linn*), bagru (*Cleome brachycarpa*), bathua (*Chenopodium album, Linn*), kharshna, sinian (*Crotolaria burhia, Buch*), phog (*Calligonum polygonoides*), bokana (*Commelina bengalensis*), dhatura (*Datura metel*), bhangra

(*Eclipta prostrata*, Linn), thor (*Euphorbia neriifolia*, Linn), thor (*Euphorbia nivulia*, "Ham), gangeran (*Grewia tenax*), lana (*Haloxylon sallcornicum*), kheenp (*Leptadenia pyrotechnica*, Roxb), morali (*Lycium barbarum*), naag-phani (*Opuntia elatior*, Mill), ban tulsī (*Ocimum sanctum*), arand (*Ricinus communis*, Linn), dasran (*Rhus mysorensis*), sarpgandha (*Rauwolfia serpentina*, Linn), sajee (*Salsala griffithii*), kateli (*Solenum surattense*), gokhru (*Tribuu surattense*), Dudhi (*Vallatis solanace*, roth), hiran khuri (*Wattakaka volubilis*), asvagandha (*Withanid sormifera*), jhar ber (*Ziziphus nummularia*), kair (*Capparis deciduas*) etc;

AND WHEREAS, the Tal Chhapar Wildlife Sanctuary provide habitat for faunal species such as blue bull or nilgai (*Boselaphus tragocamelus*), capped langur (*Presbytis pileatus*), common fox (*Vulpes bengalensis*) common langur (*Presbytis entellus*), desert cat (*Felis libyca*), five striped squirrel (*Funambulees pennanti*), golden cat (*Felis temminopi*), hyaena (*Hyaena hyaena*(Linn)), hedge hog (*Hemiechinus auritus*(Gmelin)), Indian hare (*Lepus nigricollis ruficaudatus*), desert hare (*Lepus nigricollis dayanus*), Indian porcupine (*Hystrix indica*(Kerr)), jackal (*Canis aureus*(Linn)), Indian gerbille (*Tatera indica*), jungle cat (*Felis chaus*(Gildenstaedt)), mongoose (*Herpestes edwardsii*), otter (*Lutra perspicillata*(Geoffroy)), ratel or honey badger (*Mellivora capensis*(Schreber)), red fox (*Vulpes vulpes*(Linn)), Indian gazelle (*Gazella gazella*), black buck (*Antelope cervicapra*) etc;

AND WHEREAS, the major avi-faunal species present in the Wildlife Sanctuary are demoiselle crane (*Grus virgo*), common crane (*Grus grus*), bar-headed goose (*Anser indicus*), ruddy shelduck (*Tadorna ferruginia*), common teal (*Anas crecca*), black-shouldered kite (*Elanus caeruleus*), shikra (*Accipiter badius*), tawny eagle (*Aquila rapax*), laggar falcon (*Falco jugger*), red-headed falcon (*Falco chicquera*), merlin (*Falco columbarius*), common kestrel (*Falco tinnunculus*), lesser kestrel (*Falco naumanni*), steppe eagle (*Aquila nipalensis*) greater-spotted eagle (*Clanga clanga*), eastern imperial eagle (*Aquila heliaca*), spotted owl (*Athena brahma*), Eurasian eagle owl (*Bubo bubo*), Short-eared owl (*Asio flammeus*), Stoliczka's bushchat (*Saxicola macrorhynchus*), hen harrier (*Circus cyaneus*), pallid harrier (*Circus macrourus*), Montagu's harrier (*Circus pygargus*), western marsh harrier (*Circus aeruginosus*), Siberian stonechat (*Saxicola maurus*), Richard's pipit (*Anthus richardi*), long-billed pipit (*Anthus similis*), tawny pipit (*Anthus campestris*), water pipit (*Anthus spinoletta*), black drongo (*Dicrurus macrocercus*), short-toed snake eagle (*Circaetus gallicus*), pied avocet (*Recurvirostra avosetta*), Northern pintail (*Anas acuta*), common coot (*Fulica atra*), white-tailed lapwing (*Vanellus leucurus*), red-wattled lapwing (*Vanellus indicus*), yellow-wattled lapwing (*Vanellus malabaricus*), sociable lapwing (*Vanellus gregarius*), little grebe (*Tachybaptus ruficollis*), black-winged stilt (*Himantopus himantopus*), grey francolin (*Francolinus pondicerianus*), ruff (*Philomachus pugnax*), gadwall (*Anas strepera*), Eurasian wigeon (*Mareca Penelope*), chestnut-bellied sand grouse (*Pterocles exustus*) etc;

AND WHEREAS, important species of butterfly, insects and reptiles present in the Tal Chhapar Wildlife Sanctuary are water scavenger beetle (*Hydrophilidae*), predacious diving beetle (*Agabus bicolor*), riffle beetle (*Elmidae*), marsh beetle (*Prionocyphon limbata*), backswimmer (*Notonectidae*), water boatman (*Corixidae*), water striders (*Gerridae*), water scorpion (*Nepidae*), butterflies (*Rhopalocera*), stick insect (*Phasmatoidea*), praying mantis (*Mantodea*), grasshopper (*Caelifera*), locust (*Schistocerca gregaria*), cricket (*Gryllidae*), metallic beetle (*Buprestidae*), dung beetle (*Phanaeus vindex* MacLachlan), toilet beetle (*Virginia scoffed*), honeybee (*Apis mellifera*), wasp (*Vespula vulgaris*), xylocoppa (Carpenter bee), sand wasp (*Bembicini*), mudwasp (*Mud dauber*), sphinxmoth (*Sphingidae*), firefly (*Lampyridae*), cicada (*Cicadidae*), termite (*Isoptera*), cockroach (*Blattella asahinai*), blister beetle (*Meloidae*), pentatomid bug (*Pentatomidae*), buprestid beetle (*Buprestidae*), monitor lizard (*Varanus griseus dasudini*), python (*Cenrus python*), starred tortoise (*Geochalone elegans*), Indian cobra (*Naja naja*), common Indian krait (*Bungarus caeruleus*), russell's viper (*Vipera russelli*), saw-sealed Viper (*Echis Carinata*), John earth boa (*Eryx johnii*) spiny tailed lizard (*Uromastix hardwickii*) dhaman or rat snake (*Ptyas mucosus*, brooks gecko (*Hemidactylus brooki*, house gecko (*Hemidactylus flaviviridis*), common garden lizard (*Calotes versicolor*, common skink (*Mabuya carinata*) etc;

AND WHEREAS, it is necessary to conserve and protect the area, extent and boundary of which is specified in paragraph 1 of this notification around the protected area of Tal Chhapar Wildlife Sanctuary as Eco-sensitive zone from ecological, environmental and biodiversity point of view and to prohibit industries or class of industries and their operations and processes in the said Eco-Sensitive Zone;

NOW THEREFORE, in exercise of the powers conferred by sub section (1) and clauses (v) and (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of Section 3 of the Environment (Protection) Act 1986 (29 of 1986) (hereafter in this notification referred to as the Environment Act), read with sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, the Central Government hereby notifies the area to an extent of 0.05 kilometres to 3.4 kilometres around the boundary of Tal Chhapar Wildlife Sanctuary in the State of Rajasthan as the Tal Chhapar Wildlife Sanctuary, Eco-sensitive Zone (herein after referred to as the Eco-sensitive Zone) details of which are as under, namely: -

1. Extent and boundaries of Eco-sensitive Zone. – (1) the extent of Eco-sensitive Zone varies from **0.05 kilometres to 3.4 kilometres** around the Tal Chhapar Wildlife Sanctuary. The area of Eco-sensitive Zone is **19 square kilometres**.

Extent of Eco-sensitive zone in different directions (kilometres) as given below:-

DIRECTION	EXTENT
North	0.05 Km
North-East	2.9 Km
East	0.8 Km
South-East	0.6 Km
South	3.4 Km
South-West	1.2 Km
West	1.6 Km
North-West	1.3 Km

The minimum extent is 0.05 kilometres as Nokha Sikar Highway passes near the Northern boundary of the Tal Chhapar Wildlife Sanctuary. The densely populated Chhapar and Charwas villages along with state highway are located near the north side of the sanctuary which used to cause accidental road kills of wild animals. Therefore, a 3.5 kilometre long wall was constructed by State Govt. towards northern boundary in 2005-06 to avoid such accidents and provide protection to the Wildlife.

- (2) The boundary description of Tal Chhapar Wildlife Sanctuary and its Eco-sensitive Zone is given in **Annexure-I**.
 - (3) The map of the Eco-sensitive Zone along with boundary details and latitudes and longitudes is appended as **Annexure-II A, Annexure-II B, Annexure-II C, Annexure-II D, Annexure-II E and Annexure-II F**.
 - (4) The geo-coordinates of Tal Chhapar Wildlife Sanctuary and its Eco-sensitive Zone are given in table **A and B of Annexure-III**.
 - (5) The list of villages falling within the Eco-sensitive Zone is appended as **Annexure-IV**.
- 2. Zonal Master Plan for Eco-sensitive Zone.**-(1) The State Government shall, for the purpose of the Eco-sensitive Zone prepare, a Zonal Master Plan, within a period of two years from the date of publication of this notification in the Official Gazette, in consultation with local people and adhering to the stipulations given in this notification and get it duly approved by the competent authority in the State.
- (2) The Zonal Master Plan for the Eco-sensitive Zone shall be prepared by the State Government in such manner as is specified in this notification and also in consonance with the relevant Central and State laws and the guidelines issued by the Central Government, if any.
 - (3) The Zonal Master Plan shall be prepared in consultation with the following State Departments, for integrating the ecological and environmental considerations into the said plan, namely:-
 - (i) Environment;
 - (ii) Forest and Wildlife;
 - (iii) Agriculture;
 - (iv) Revenue;
 - (v) Urban Development;
 - (vi) Tourism;
 - (vii) Rural Development;
 - (viii) Irrigation and Flood Control;
 - (ix) Municipal;
 - (x) Panchayati Raj;
 - (xi) Public Works Department.
 - (4) The Zonal Master Plan shall not impose any restriction on the approved existing land use, infrastructure and activities, unless so specified in this notification and the Zonal Master Plan shall factor in improvement of all infrastructure and activities to be more efficient and eco-friendly.
 - (5) The Zonal Master Plan shall provide for restoration of denuded areas, conservation of existing water bodies, management of catchment areas, watershed management, groundwater management, soil and moisture conservation, needs of local community and such other aspects of the ecology and environment that need attention.

- (6) The Zonal Master Plan shall demarcate all the existing worshipping places, villages and urban settlements, types and kinds of forests, agricultural areas, fertile lands, green area, such as, parks and like places, horticultural areas, orchards, lakes and other water bodies with supporting maps and the Plan shall be supported by maps giving details of existing and proposed land use features.
- (7) The Zonal Master Plan shall provide mechanism for regulating developmental activities in Eco-sensitive Zone and adhere to prohibited and regulated activities listed in the Table in paragraph 4 and also ensure and promote eco-friendly development for livelihood security of local communities.
- (8) The Zonal Master Plan shall be co-terminus with the Regional Development Plan.
- (9) The Zonal Master Plan so approved by the State Government shall be the reference document for the Monitoring Committee for carrying out its functions of monitoring in accordance with the provisions of this notification.

3. Measures to be taken by the State Government.—The State Government shall take the following measures for giving effect to the provisions of this notification, namely:—

- (1) **Land use.**— (a) Forests, horticulture areas, agricultural areas, parks and open spaces earmarked for recreational purposes in the Eco-sensitive Zone shall not be used or converted into areas for commercial or residential complex or industrial activities:

Provided that the conversion of agricultural and other lands, for the purpose other than that specified at part (a), within the Eco-sensitive Zone may be permitted on the recommendation of the Monitoring Committee, and with the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of Central/State Government as applicable and vide provisions of this Notification, to meet the residential needs of the local residents and for activities such as:—

- (i) Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads;
- (ii) Construction and renovation of infrastructure and civic amenities;
- (iii) Small scale industries not causing pollution;
- (iv) Cottage industries including village industries; convenience stores and local amenities supporting eco-tourism including home stay; and
- (v) Promoted activities given under para 4:

Provided further that no use of tribal land shall be permitted for commercial and industrial development activities without the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of State Government and without compliance of the provisions of article 244 of the Constitution or the law for the time being in force, including the Scheduled Tribes and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006 (2 of 2007):

Provided also that any error appearing in the land records within the Eco-sensitive Zone shall be corrected by the State Government, after obtaining the views of Monitoring Committee, once in each case and the correction of said error shall be intimated to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change:

Provided also that the above correction of error shall not include change of land use in any case except as provided under this sub-paragraph;

- (b) efforts shall be made to reforest the unused or unproductive agricultural areas with afforestation and habitat restoration activities.

- (2) **Natural water bodies.**—The catchment areas of all natural springs shall be identified and plans for their conservation and rejuvenation shall be incorporated in the Zonal Master Plan and the guidelines shall be drawn up by the State Government in such a manner as to prohibit development activities at or near these areas which are detrimental to such areas.

- (3) **Tourism or Eco-tourism.**— (a) All new eco-tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be as per the Tourism Master Plan for the Eco-sensitive Zone;

- (b) the Tourism Master Plan shall be prepared by the Union Territory Department of Tourism in consultation with the Union Territory Departments of Environment and Forests;
- (c) the Tourism Master Plan shall form a component of the Zonal Master Plan.
- (d) the Tourism Master Plan shall be drawn based on the study of carrying capacity of the Eco-sensitive Zone;

(e) the activities of eco-tourism shall be regulated as under, namely:-

- (i) new construction of hotels and resorts shall not be allowed within one kilometer from the boundary of the protected area or upto the extent of the Eco-sensitive Zone, whichever is nearer:

Provided that beyond the distance of one kilometre from the boundary of the protected area till the extent of the Eco-sensitive Zone, the establishment of new hotels and resorts shall be allowed only in pre-defined and designated areas for eco-tourism facilities as per Tourism Master Plan;

- (ii) all new tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the guidelines issued by the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change and the eco-tourism guidelines issued by the National Tiger Conservation Authority (as amended from time to time) with emphasis on eco-tourism, eco-education and eco-development;

- (iii) until the Zonal Master Plan is approved, development for tourism and expansion of existing tourism activities shall be permitted by the concerned regulatory authorities based on the actual site specific scrutiny and recommendation of the Monitoring Committee and no new hotel, resort or commercial establishment construction shall be permitted within Eco-sensitive Zone area.

- (4) **Natural heritage.-** All sites of valuable natural heritage in the Eco-sensitive Zone, such as the gene pool reserve areas, rock formations, waterfalls, springs, gorges, groves, caves, points, walks, rides, cliffs, etc. shall be identified and a heritage conservation plan shall be drawn up for their preservation and conservation as a part of the Zonal Master Plan.

- (5) **Man-made heritage sites.-** Buildings, structures, artefacts, areas and precincts of historical, architectural, aesthetic, and cultural significance shall be indentified in the Eco-sensitive Zone and heritage conservation plan for their conservation shall be prepared as part of the Zonal Master Plan.

- (6) **Noise pollution.** -Prevention and control of noise pollution in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Noise Pollution (Regulation and Control) Rules, 2000 under the Environment Act and the rules made thereunder as amended from time to time.

- (7) **Air pollution.-** Prevention and control of air pollution in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the provisions of the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981 (14 of 1981) and the rules made thereunder and amendments thereto.

- (8) **Discharge of effluents.** - Discharge of treated effluent in Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the provisions of the General Standards for Discharge of Environmental Pollutants covered under the Environment Act and rules made thereunder or standards stipulated by State Government whichever is more stringent.

- (9) **Solid wastes.-** Disposal and management of solid wastes shall be as under:-

- a. the solid waste disposal and management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Solid Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change vide notification number S.O. 1357 (E), dated the 8th April, 2016; the inorganic material may be disposed in an environmental acceptable manner at site identified outside the Eco-sensitive Zone;
- b. safe and Environmentally Sound Management (ESM) of Solid wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within Eco-Sensitive Zone.

- (10) **Bio-medical waste.** – Bio medical waste management shall be as under:

- a. The bio-medical waste disposal in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Bio-Medical Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number GSR 343 (E), dated the 28th March, 2016;
- b. safe and Environmentally Sound Management (ESM) of Bio-medical wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within Eco-Sensitive Zone.

- (11) **Plastic waste management.** - The plastic waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Plastic Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 340(E), dated the 18th March, 2016, as amended from time to time.

- (12) **Construction and demolition waste management.** - The construction and demolition Waste Management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Construction and Demolition Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and

Climate Change vide notification number G.S.R. 317(E), dated the 29th March, 2016, as amended from time to time.

- (13) **E-waste.** - The e - waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the E-Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, as amended from time to time.
- (14) **Vehicular traffic.** - The vehicular movement of traffic shall be regulated in a habitat friendly manner and specific provisions in this regard shall be incorporated in the Zonal Master Plan and till such time as the Zonal Master plan is prepared and approved by the Competent Authority in the State Government, the Monitoring Committee shall monitor compliance of vehicular movement under the relevant Acts and the rules and regulations made thereunder.
- (15) **Vehicular pollution.** - Prevention and control of vehicular pollution shall be carried out with in accordance with applicable laws and efforts shall be made for use of cleaner fuel.
- (16) **Industrial units.** -
- (a) On or after the publication of this notification in the Official Gazette, no new polluting industries shall be permitted to be set up within the Eco-sensitive Zone;
- (b) only non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per classification of Industries in the guidelines issued by the Central Board in February 2016, as amended from time to time, unless so specified in this notification, and in addition, non-polluting cottage industries shall be promoted.
- (17) **Protection of hill slopes.** - The protection of hill slopes shall be as under:-
- (a) the Zonal Master Plan shall indicate areas on hill slopes where no construction shall be permitted;
- (b) no construction on existing steep hill slopes or slopes with a high degree of erosion shall be permitted.

4. List of activities prohibited or to be regulated within the Eco-sensitive Zone.-

All activities in the Eco sensitive Zone shall be governed by the provisions of the Environment Act and the rules made there under including the Coastal Regulation Zone (CRZ), 2011 and the Environmental Impact Assessment (EIA) Notification, 2006 and other applicable laws including the Forest (Conservation) Act, 1980 (69 of 1980), the Indian Forest Act, 1927 (16 of 1927), the Wildlife (Protection) Act 1972 (53 of 1972), and amendments made thereto and be regulated in the manner specified in the Table below, namely:-

TABLE

S No (1)	Activity (2)	Description (3)
A. Prohibited Activities		
1.	Commercial mining, stone quarrying and crushing units	(a) All new and existing mining (minor and major minerals), stone quarrying and crushing units shall be prohibited with immediate effect except for meeting the domestic needs of bona fide local residents including digging of earth for construction or repair of houses within Eco- sensitive Zone; (b) The mining operations shall be carried out in accordance with the order of the Hon'ble Supreme Court dated 4 th August 2006 in the matter of T.N. GodavarmanThirumulpad Vs. UOI in W.P.(C) No.202 of 1995 and dated 21 st April 2014 in the matter of Goa Foundation Vs. UOI in W.P.(C) No.435 of 2012.
2.	Setting of industries causing pollution (Water, Air, Soil, Noise, etc.).	No new industries and expansion of existing polluting industries in the Eco-sensitive zone shall be permitted. Only non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive zone as per classification of Industries in the guidelines issued by Central Pollution Control Board in February 2016, as amended from time to time, unless otherwise specified in this notification and non-polluting cottage industries shall be promoted.
3.	Establishment of major hydro-electric project.	Prohibited.
4.	Use or production or processing of any hazardous substances.	Prohibited.
5.	Discharge of untreated effluents in	Prohibited.

	natural water bodies or land area.	
6.	Setting of new saw mills.	No new or expansion of existing saw mills shall be permitted within the Eco-sensitive Zone.
7.	Setting up of brick kilns.	Prohibited.
8.	Establishment of large-scale commercial livestock and poultry farms by firms, corporate, companies.	Prohibited.
9.	Establishment of Solid Waste disposal site and common incineration facility for solid and bio medical waste.	Prohibited.
B. Regulated Activities		
10.	Commercial establishment of hotels and resorts.	No new commercial hotels and resorts shall be permitted within one kilometer of the boundary of the Protected Area or upto the extent of Eco-sensitive zone, whichever is nearer, except for small temporary structures for eco-tourism activities: Provided that, beyond one kilometer from the boundary of the protected Area or upto the extent of Eco-sensitive zone whichever is nearer, all new tourist activities or expansion of existing activities shall be in conformity with the Tourism Master Plan and guidelines as applicable.
11.	Construction activities.	(a) New commercial construction of any kind shall not be permitted within one kilometer from the boundary of the Protected Area or upto extent of the Eco-sensitive Zone whichever is nearer: Provided that, local people shall be permitted to undertake construction in their land for their use including the activities listed in sub-paragraph (1) of paragraph 3 as per building bye-laws to meet the residential needs of the local residents: Provided that the construction activity related to small scale industries not causing pollution shall be regulated and kept at the minimum, with the prior permission from the competent authority as per applicable rules and regulations, if any. (b) Beyond one kilometer it shall be regulated as per the Zonal Master Plan.
12.	Small scale non-polluting industries.	Non-polluting industries as per classification of industries issued by the Central Pollution Control Board in February 2016, as amended from time to time and non-hazardous, small-scale and service industry, agriculture, floriculture, horticulture or agro-based industry producing products from indigenous materials from the Eco-sensitive Zone shall be permitted by the competent Authority.
13.	Felling of trees.	(a) There shall be no felling of trees on the forest or Government or revenue or private lands without prior permission of the competent authority in the State Government. (b) The felling of trees shall be regulated in accordance with the provisions of the concerned Central or State Act and the rules made there under.
14.	Collection of Forest produce or Non-Timber Forest produce (NTFP).	Regulated under applicable laws.
15.	Erection of electrical and communication towers and laying of cables and other infrastructures.	Regulated under applicable laws (underground cabling may be promoted).
16.	Infrastructure including civic amenities.	Shall be done with mitigation measures, as per applicable laws, rules and regulation and available guidelines.
17.	Widening and strengthening of existing roads and construction of	Shall be done with mitigation measures, as per applicable laws, rules and regulation and available guidelines.

	new roads.	
18.	Undertaking other activities related to tourism like over flying the Eco-sensitive zone area by hot air balloon, helicopter, drones, Microlites, etc.	Regulated under applicable laws.
19.	Protection of Hill Slopes and river banks.	Regulated under applicable laws.
20.	Movement of vehicular traffic at night.	Regulated for commercial purpose under applicable laws.
21.	Ongoing agriculture and horticulture practices by local communities along with dairies, dairy farming, aquaculture and fisheries.	Permitted under applicable laws for use of locals.
22.	Discharge of treated waste water/effluents in natural water bodies or land area.	The discharge of treated waste water/effluents shall be avoided to enter into the water bodies and efforts shall be made for recycle and reuse of treated waste water, and the discharge of treated waste water/effluent shall be regulated as per applicable laws.
23.	Commercial extraction of surface and ground water.	Regulated under applicable laws.
24.	Open Well, Bore Well etc. for agriculture or other usage	Regulated under applicable laws.
25.	Solid Waste Management.	Regulated under applicable laws.
26.	Introduction of Exotic species.	Regulated under applicable laws.
27.	Eco-tourism.	Regulated under applicable laws.
28.	Use of Polythene Bags	Regulated under applicable laws.
29.	Commercial Sign boards and hoardings.	Regulated under applicable laws.
C. Promoted Activities		
30.	Rain water harvesting.	Shall be actively promoted.
31.	Organic farming.	Shall be actively promoted.
32.	Adoption of green technology for all activities.	Shall be actively promoted.
33.	Cottage industries including village artisans, etc.	Shall be actively promoted.
34.	Use of renewable energy and fuels.	Bio gas, solar light etc. shall be actively promoted.
35.	Agro-Forestry.	Shall be actively promoted.
36.	Plantation of Horticulture and Herbs.	Shall be actively promoted.
37.	Use of eco-friendly transport.	Shall be actively promoted.
38.	Skill Development.	Shall be actively promoted.
39.	Restoration of Degraded Land/ Forests/ Habitat.	Shall be actively promoted.
40.	Environmental Awareness.	Shall be actively promoted.

5. Monitoring Committee for Monitoring the Eco-Sensitive Zone Notification:

For effective monitoring of the provisions of this notification under sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986, the Central Government hereby constitutes a Monitoring Committee, comprising of the following, namely:

S.N	Constituent of the Monitoring Committee	Designation
1.	District Collector, Churu	Chairman;
2.	One representative of Non-Governmental Organization working in the field	Member;

	of environment to be nominated by the Government of Rajasthan	
3.	An expert in the area of ecology and environment to be nominated by Govt. of Rajasthan	Member;
4.	District level officers of the Public Works Department	Member;
5.	District level officers of the Town Planning Department	Member;
6.	District level officers of the Industry Department	Member;
7.	Regional Officer (RO) of the State Pollution Control Board	Member;
8.	Wildlife Warden, Bikaner	Member;
9.	An expert in the field of Biodiversity	Member;
10.	Range forest Officer, Tal Chhapar Wildlife Sanctuary	Member;
11.	Assistant Conservator of Forests, Tal Chhapar Wildlife Sanctuary	Member ;
12.	Deputy Conservator of Forests, Churu	Member Secretary.

6. Terms of Reference. –

- (1) The Monitoring Committee shall monitor the compliance of the provisions of this notification.
- (2) The tenure of the Monitoring Committee shall be till further orders, provided that the non-official members of the Committee shall be nominated by the State Government from time to time.
- (3) The activities that are covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forest number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006, and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change for prior environmental clearances under the provisions of the said notification.
- (4) The activities that are not covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment, Forest number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006 and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinized by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the concerned regulatory authorities.
- (5) The Member Secretary of the Monitoring Committee or the concerned Deputy Commissioner(s) shall be competent to file complaints under section 19 of the Environment Act against any person who contravenes the provisions of this notification.
- (6) The Monitoring Committee may invite representatives or experts from concerned Departments, representatives from industry associations or concerned stakeholders to assist in its deliberations depending on the requirements on issue to issue basis.
- (7) The Monitoring Committee shall submit the annual action taken report of its activities as on the 31st March of every year by the 30th June of that year to the Chief Wildlife Warden in the State as per proforma appended at Annexure V.
- (8) The Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change may give such directions, as it deems fit, to the Monitoring Committee for effective discharge of its functions.

7. **Additional Measures.** - The Central Government and State Government may specify additional measures, if any, for giving effect to provisions of this notification.

8. **Supreme Court, etc. orders.** - The provisions of this notification shall be subject to the orders, if any passed or to be passed by the Hon'ble Supreme Court of India or High Court or the National Green Tribunal.

[F. No. 25/09/2019-ESZ]

Dr. SATISH C. GARKOTI, Scientist 'G'

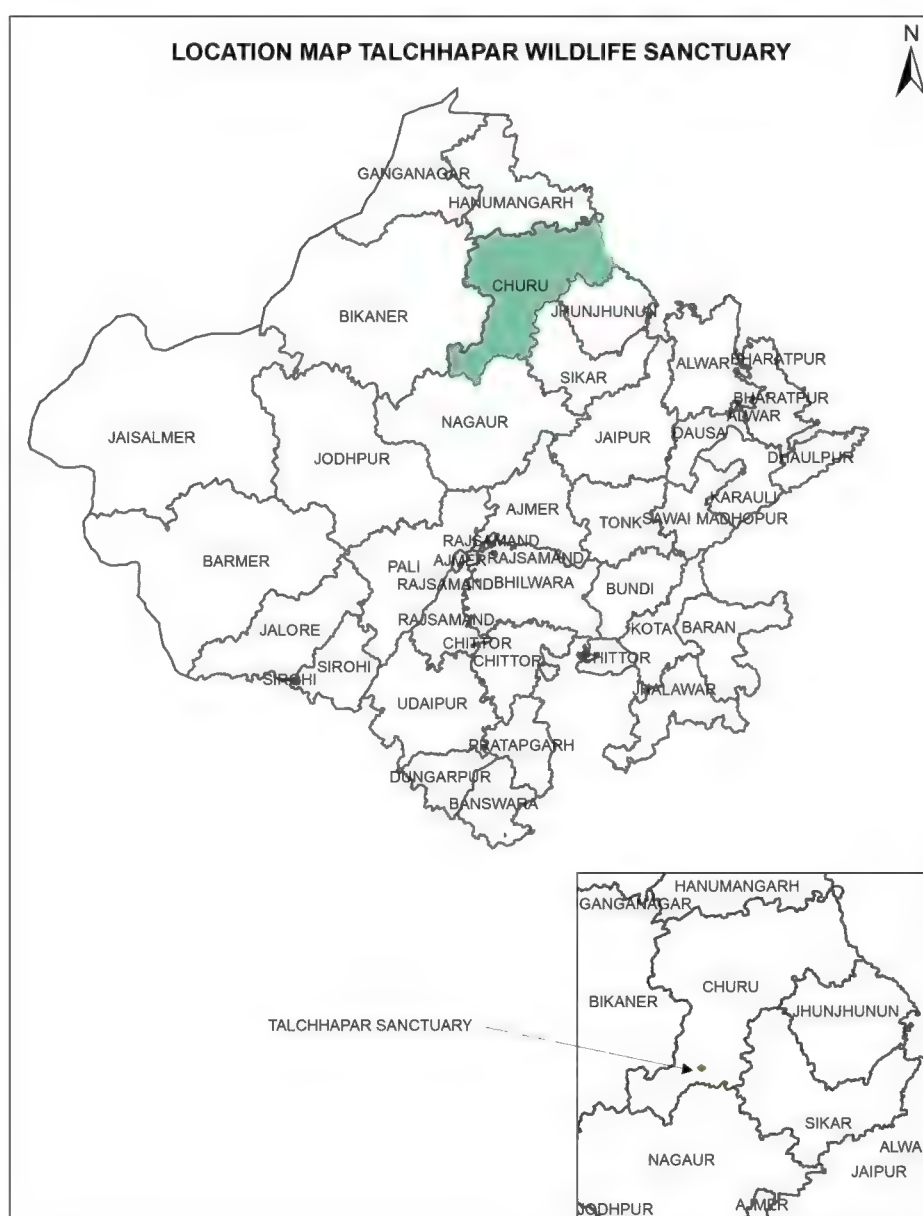
ANNEXURE- I

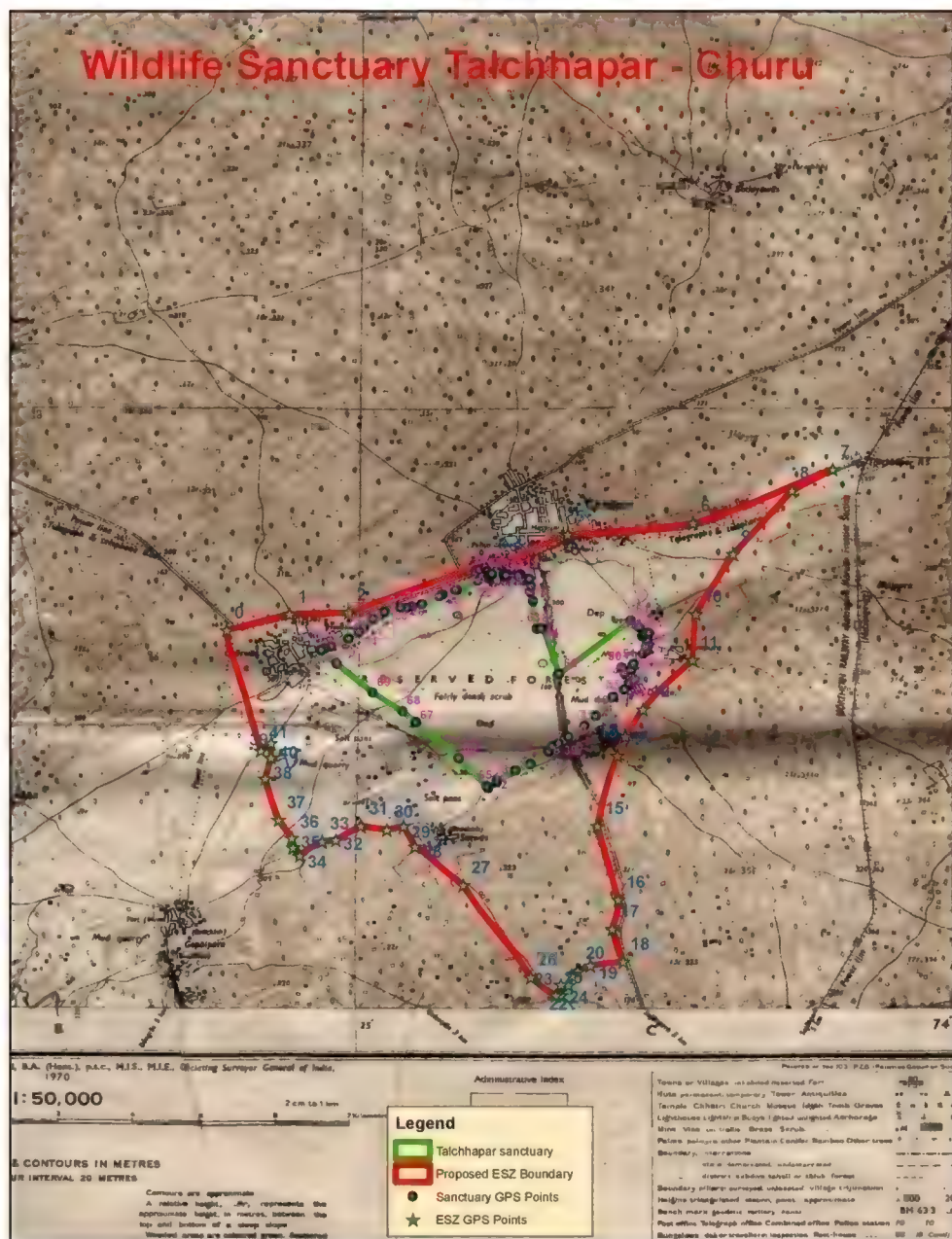
BOUNDARY DESCRIPTION OF ECO-SENSITIVE ZONE AROUND TALCHAPPAR WILDLIFE SANCTUARY

Eastern Boundary: Kishangarh-Hanumangarh Mega Highway from Railway station Chhapar to the point where Revenue village boundary of Dewani-Gulerian intersect the highway.

Northern Boundary: Chadwas to Taal Chhapar Railway station on up to mega highway.

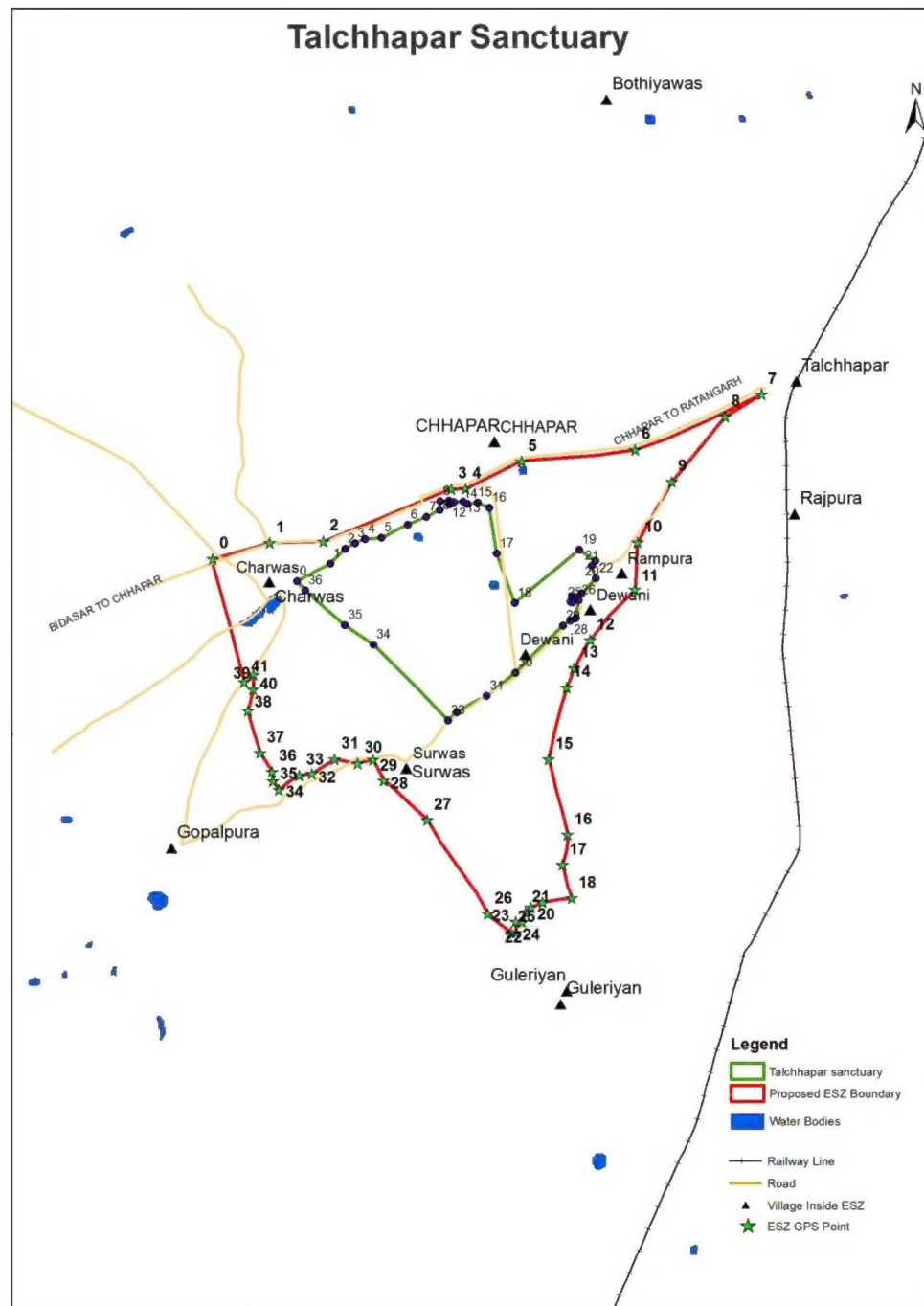
5. East of Sanctuary:- Gowshala Chhapar, about 300 hectares Total: About 2700 Hectares.

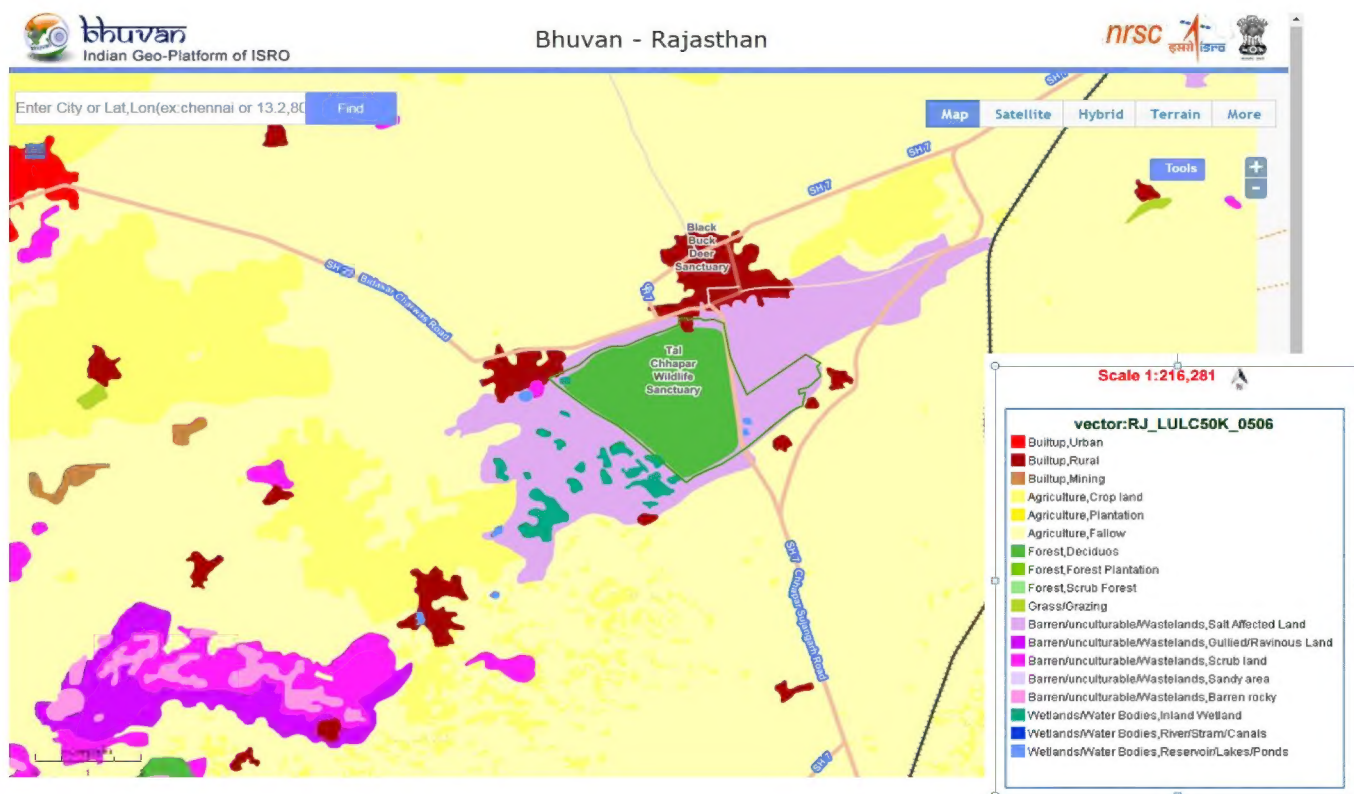
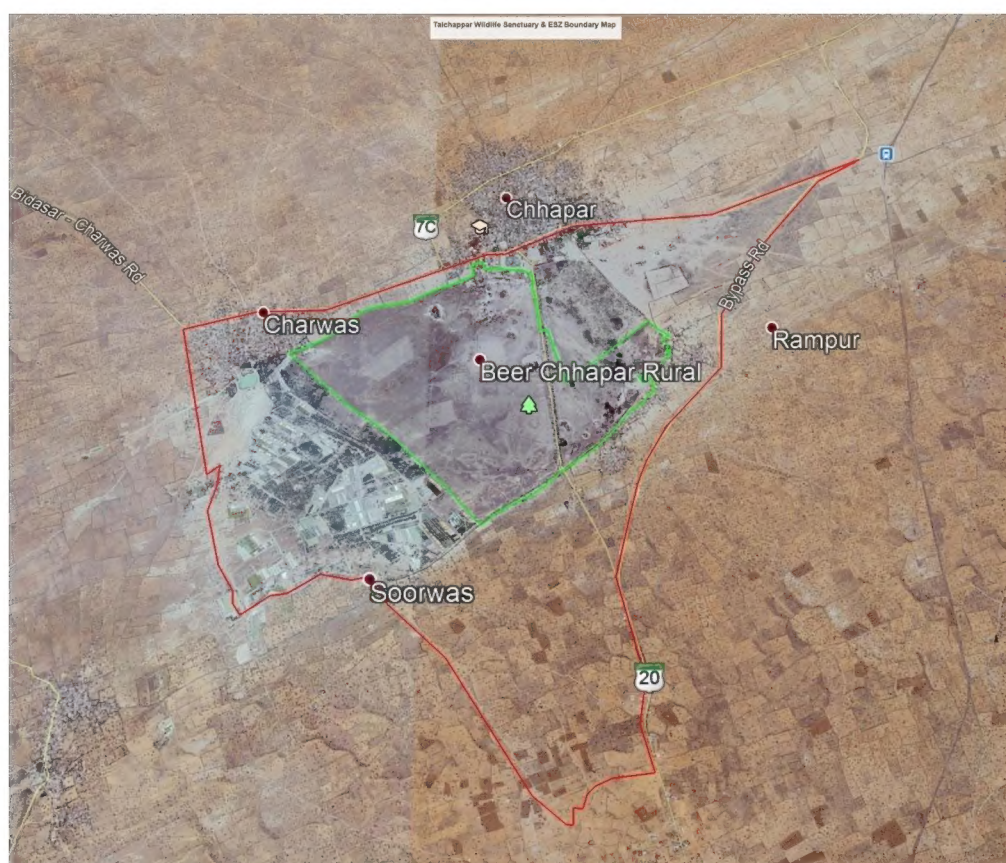


ANNEXURE- II B**MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF THE PROTECTED AREA ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS ON SURVEY OF INDIA (SOI) TOPOSHEET**

ANNEXURE- IIC**MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF THE TALCHHAPAR WILDLIFE SANCTUARY ON SURVEY OF INDIA (SOI) TOPOSHEET**

MAP OF TALCHAPPAR WILDLIFE SANCTUARY & ITS ECO-SENSITIVE ZONE WITH PROMINENT POINTS



ANNEXURE- IIE**LAND USE MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE AROUND TALCHHAPAR WILDLIFE SANCTUARY****ANNEXURE- IIF****GOOGLE MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE AROUND TALCHHAPPAR WILDLIFE SANCTUARY**

ANNEXURE-III**TABLE A: Geo-coordinates of Prominent Locations of TalChhappar Wildlife Sanctuary**

TALCHAPPAR WILDLIFE SANCTUARY					
S.no.	Latitude	Longitude	S.no.	Latitude	Longitude
1	N 27° 48' 04.1"	E 74° 24' 57.7"	22	N 27° 48' 03.1"	E 74° 27' 26.9"
5	N 27° 48' 20.1"	E 74° 25' 29.4"	23	N 27° 47' 51.1"	E 74° 27' 20.0"
7	N 27° 48' 28.3"	E 74° 25' 51.7"	24	N 27° 47' 49.5"	E 74° 27' 14.0"
8	N 27° 48' 32.8"	E 74° 26' 02.5"	25	N 27° 47' 46.5"	E 74° 27' 15.7"
15	N 27° 48' 36.0"	E 74° 26' 23.8"	26	N 27° 47' 48.5"	E 74° 27' 19.1"
16	N 27° 48' 33.8"	E 74° 26' 28.0"	29	N 27° 47' 38.5"	E 74° 27' 15.8"
17	N 27° 48' 09.1"	E 74° 26' 34.9"	30	N 27° 47' 09.8"	E 74° 26' 39.6"
18	N 27° 47' 46.3"	E 74° 26' 43.0"	31	N 27° 46' 57.8"	E 74° 26' 21.2"
19	N 27° 48' 13.1"	E 74° 27' 19.0"	32	N 27° 46' 52.0"	E 74° 26' 11.7"
20	N 27° 48' 06.6"	E 74° 27' 28.1"	33	N 27° 46' 49.1"	E 74° 26' 07.6"

TABLE B: Geo-coordinates of Prominent Locations of Eco-Sensitive Zone

ESZ AROUND TAL CHAPPAR WILDLIFE SANCTUARY					
S.no.	Latitude	Longitude	S.no.	Latitude	Longitude
0	N 27° 48' 08.4"	E 74° 23' 56.5"	18	N 27° 45' 22.4"	E 74° 27' 14.8"
1	N 27° 48' 16.2"	E 74° 24' 28.0"	22	N 27° 45' 10.6"	E 74° 26' 47.5"
2	N 27° 48' 17.0"	E 74° 24' 57.6"	23	N 27° 45' 10.9"	E 74° 26' 43.9"
4	N 27° 48' 42.8"	E 74° 26' 16.3"	24	N 27° 45' 05.4"	E 74° 26' 43.9"
5	N 27° 48' 55.7"	E 74° 26' 45.3"	25	N 27° 45' 05.6"	E 74° 26' 41.2"
6	N 27° 49' 01.9"	E 74° 27' 49.9"	26	N 27° 45' 14.6"	E 74° 26' 28.5"
7	N 27° 49' 28.9"	E 74° 28' 59.8"	27	N 27° 45' 49.2"	E 74° 26' 02.6"
8	N 27° 49' 18.1"	E 74° 28' 39.5"	28	N 27° 46' 19.8"	E 74° 25' 30.9"
9	N 27° 48' 46.2"	E 74° 28' 10.1"	30	N 27° 46' 30.1"	E 74° 25' 25.1"
10	N 27° 48' 15.7"	E 74° 27' 50.8"	32	N 27° 46' 30.4"	E 74° 25' 03.8"
11	N 27° 47' 53.4"	E 74° 27' 49.6"	33	N 27° 46' 15.4"	E 74° 24' 33.0"
12	N 27° 47' 15.0"	E 74° 27' 16.1"	35	N 27° 46' 24.3"	E 74° 24' 29.3"
13	N 27° 47' 05.5"	E 74° 27' 11.9"	37	N 27° 46' 33.4"	E 74° 24' 22.6"
14	N 27° 46' 56.7"	E 74° 27' 08.8"	38	N 27° 46' 51.4"	E 74° 24' 16.4"
15	N 27° 46' 30.3"	E 74° 27' 02.0"	39	N 27° 47' 04.6"	E 74° 24' 18.7"
16	N 27° 45' 53.4"	E 74° 27' 12.5"	40	N 27° 47' 11.8"	E 74° 24' 18.9"
17	N 27° 45' 38.6"	E 74° 27' 09.7"	41	N 27° 47' 24.9"	E 74° 24' 13.8"

ANNEXURE-IV**LIST OF VILLAGES WITH AREA COMING UNDER ECO-SENSITIVE ZONE AROUND TALCHHAPAR WILDLIFE SANCTUARY ALONG WITH GEO-COORDINATES**

Sl. No.	District/Division	Tehsil	Name of Villages	Latitude	Longitude
i.	Churu	Sujangarh	Chadwas	27° 48' 02.1" N	74° 24' 35.3" E
ii.	Churu	Sujangarh	Dewani	27° 47' 29.4" N	74° 27' 16.8" E
iii.	Churu	Sujangarh	Rampur	27° 48' 00.8" N	74° 27' 39.5" E

iv.	Churu	Sujangarh	Soorwas	27° 46' 22.7" N	74° 25' 31.0" E
v.	Churu	Sujangarh	Chhapar	27° 48' 39.9" N	74° 26' 14.0" E

Annexure –V**Performa of Action Taken Report: - Eco-sensitive Zone Monitoring Committee.-**

1. Number and date of Meetings
2. Minutes of the meetings: Mention main noteworthy points. Attach Minutes of the meeting as separate Annexure:
3. Status of preparation of Zonal Master Plan including Tourism Master Plan:
4. Summary of cases dealt for rectification of error apparent on face of land record (Eco-sensitive Zone wise). Details may be attached as Annexure:
5. Summary of cases scrutinised for activities covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006. Details may be attached as separate Annexure:
6. Summary of cases scrutinised for activities not covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006:
Details may be attached as separate Annexure:
7. Summary of complaints lodged under section 19 of the Environment (Protection) Act, 1986:
8. Any other matter of importance.